तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

काव्य मंजरी
Kavya Manjari
2025

केन्द्रीय विद्यालय संगठन * Kendriya Vidyalaya Sangathan

काव्य मंजरी

भाग-19

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, नई दिल्ली

© केन्द्रीय विद्यालय संगठन

काव्य मंजरी, भाग-19

शिक्षक दिवस-2025 के उपलक्ष्य में प्रकाशित केन्द्रीय विद्यालय संगठन के शिक्षकों एवं कार्मिकों द्वारा रचित कविताओं का संकलन

संरक्षकः सुश्री प्राची पाण्डेय, आयुक्त, के.वि.सं.

मुख्य संपादकः सुश्री चंदना मंडल, अपर आयुक्त (शै.)

संपादकः श्री डि. मणिवण्णन, संयुक्त आयुक्त (शै.)

संपादकीय प्रभारीः श्री सचिन राठौर, सहायक संपादक, के.वि.सं. (मु)

आवरण पृष्ठः सुश्री शमसुन निसा, टीजीटी (कला), केन्द्रीय विद्यालय मधुपुरी, फतेहपुर

अपर आयुक्त (शै.), केन्द्रीय विद्यालय संगठन, मुख्यालय नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित

दो शब्द

'काव्य मंजरी' का 19वाँ अंक पाठकों के हाथ में सौंपते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है । यह अंक न केवल केन्द्रीय विद्यालय संगठन के शिक्षकों एवं कर्मचारियों की रचनात्मकता का जीवंत प्रमाण है, बल्कि उनके भावनात्मक, सामाजिक और वैचारिक विस्तार का भी सुंदर प्रतिबिंब है ।

इस विशेषांक की कविताएँ विविध विषयों को समेटे हुए हैं - राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से लेकर प्रकृति तक, राजभाषा हिंदी से लेकर केन्द्रीय विद्यालय संगठन की गरिमा तक, संबंधों की मिठास से लेकर देशभक्ति की भावना तक, नारी सशक्तिकरण से लेकर परीक्षा पे चर्चा जैसे समसामयिक विषयों तक - हर कविता में एक अनोखा दृष्टिकोण और संवेदना की गहराई देखने को मिलती है ।

यह संग्रह इस बात का स्पष्ट संकेत है कि हमारे शिक्षकगण और स्टाफ सदस्य अपने कार्यालयीन उत्तरदायित्वों के साथ-साथ रचनात्मक लेखन के लिए भी समय निकालते हैं, और अपनी सृजनात्मक ऊर्जा से शिक्षा जगत को समृद्ध कर रहे हैं ।

'काव्य मंजरी' न केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति का मंच है, बल्कि यह राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार और प्रभावी अनुपालन का सशक्त माध्यम भी है, जो हमें हमारी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ता है और भावनात्मक एकता को बल देता है ।

मैं इस अंक के सभी रचनाकारों, संपादन एवं प्रकाशन से जुड़े समर्पित सहयोगियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देती हूँ । आशा है कि यह संकलन पाठकों के हृदय को स्पर्श करेगा और आने वाले वर्षों में और भी अधिक प्रेरणादायक काव्य सृजन को प्रोत्साहित करेगा ।

अनेक मंगल कामनाओं सहित,

प्राची पी.

प्राची पाण्डेय
आयुक्त

अनुक्रम/ Index

क्र. सं S.No	शीर्षक Title	पृ. सं. Pg. No.
1	हिन्द की बिंदी: हिन्दी	1
2	हिन्दी हमारी माता	2
3	मैं हिन्दी हूँ, मेरी गाथा जगत ने गाई	3
4	हिन्दी की व्यथा	4
5	नए तराने गाएँगे	5
6	आओ बच्चों तुम्हें दिखाऊँ केन्द्रीय विद्यालय अपना	6
7	मेरा केन्द्रीय विद्यालय निखर रहा है	7
8	निराला केन्द्रीय विद्यालय अपना	8
9	पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय	9
10	आत्मनिर्भर बने देश का हर बच्चा	10
11	केन्द्रीय विद्यालय	11
12	परीक्षा पे चर्चा	12
13	परीक्षा पे चर्चा-प्रधान मंत्र	13
14	एक पेड़ माँ के नाम	14
15	माँ, पेड़ और मिशन लाइफ	15
16	धरती माँ का श्रृंगार करें हम	16
17	पेड़ और पर्यावरण	17
18	हे भारत	18
19	मेरा देश महान है	19

20	सबसे प्यारा देश हमारा	20
21	ऐसे उत्सव, ऐसी खुशियाँ	21
22	ऑपरेशन सिंदूर	22
23	हम पंछी आज़ाद वतन के	23
24	समय का महत्व	24
25	लक्ष्य का पथ	25
26	कितना कठिन है सरल हो जाना	26
27	जिजीविषा	27
28	मैं पाठ पढ़ाने आई थी, तुमने जीवन पढ़ा दिया	28
29	अपना गाँव	29
30	अत्यधिक अधिकता	30
31	सपने उनके सच होते हैं	31
32	बारिश का मौसम	32
33	पिता	34
34	किताबें	35
35	संघर्ष	36
36	मन की बात	37
37	जीवन गीत	39
38	एक अनूठा माँ का प्यार	40
39	मेरा पहला कदम स्कूल की ओर	41
40	नवसृजन का पर्व	42

41	किस भाषा में बताऊँ	43
42	ईश्वर से मेरा नाता	45
43	उड़ान	46
44	बस यूं ही	47
45	खुद की तलाश	48
46	हम विशेष बच्चे	49
47	जिंदगी चली गई	50
48	माँ	51
49	बदलती प्रकृति के संग	52
50	खाली पन्ने, अकुलाए शब्द	53
51	समर-ओज	54
52	नारी सशक्तिकरण	55
53	अब कोई नया मनुष्य जन्म ले !	56
54	एक शिक्षक की चाह	57
55	कहाँ गई वो भोजन थाली ?	58
56	संगठन की शान	59
57	गुलमोहर ख्वाब में उतर आया	60
58	मातृभूमि की पावन माटी	61
59	शून्य से संवाद	62
60	गीत पराया गाऊँ तो लज्जा आती है	63
61	बहन-भाई का प्यारा रिश्ता	64

62	मंजिल तुझको मिल जाएगी	65
63	हर कदम, एक पहचान	66
64	तू किस्मत कब तक रूठेगी ?	67
65	यादों के दरीचे से	68
66	संकल्प प्रेरणा	69
67	ए आई 171	70
68	लगाएँ एक पेड़ !	71
69	प्यारी गौरैया	72
70	आने वाले कल को हम क्या सौंप कर जाएंगे ?	73
71	उस पार	74
72	सम्मति	75
73	चिड़िया के बच्चे	76
74	कौन है वह	77
75	मेरी माँ और मेरी कामयाबी	78
76	हम बढ़ चले	79
77	धरा संरक्षण	80
78	अपनों की कैद	81
79	शिक्षक की अभिलाषा	82
80	ध्रुव तारे सा चमकाएँगे	83
81	बाल अभिलाषा	84
82	हम ऐसे दीपक	85

83	पुस्तकें हमेशा तुम्हें बुलाती हैं	86
84	रिक्त स्थान	87
85	बिटिया	88
86	गुरुजन को प्रणाम	89
87	स्नेह की धारा	90
88	यादों का कारवां	91
89	आँखो में चमक	92
90	पदत्राण	93
91	ममता की छाँव	95
92	हाँ मैं शिक्षक हूँ	96
93	मिट्टी की तह में	97
94	बेटी: एक खज़ाना	98
95	कलम का आह्वान	99
96	हौसलों की उडान	100
97	शिक्षक	101
98	व्यथा ओर आशा	102
99	वसुंधरा की पुकार	103
100	बादल का जादू	104
101	अवसर	105
102	भट काता मन	106
103	गुरु महिमा	107

104	योग का महत्त्व	108
105	किसे ख़बर थी	109
106	जीवन के फ़साने	110
107	गुरु का वादा	111
108	माँ तेरे पास होने का एहसास	113
109	काव्य मंजरी की गाथा	114
110	Chalk Dust and New Dawns: A KVS Ode to NEP	116
111	NEP 2020: Every Child, Every Dream	118
112	PM SHRI Scheme - A Visionary Change	119
113	Every Voice at the Table - Inclusive Education	120
114	Operation Sindoor	121
115	India: A Living Hymn of Unity	122
116	Naughty Nuts	123
117	Come Again, Dear Gandhi Ji	124
118	Solitude	125
119	Between Desks and Beyond the Bell	126
120	For You, My Parents	127
121	This is Nature	128
122	Equal Wings for Equal Flight	129
123	You are my Dedication (A tribute to my student)	130
124	The Teacher as Facilitator	131

125	**In God's Design**	132
126	**The New-Age Classroom: Where Dreams Take Flight**	133
127	**A World Without Walls**	134
128	**Let them Grow**	135
129	**What It Is ?**	136
130	**Discouraged versus Empowered**	137
131	**Summer Musings**	138
132	**World of Happiness**	140
133	**The Tree of Life**	141
134	**Why this Endless Fire ?**	142
135	**The Sail of Truth**	143
136	**Let’s Wake Up**	144
137	**If Shoes Could Talk**	145
138	**Mirrors of the Mind**	146
139	**Sensitizing Senses**	147
140	**Spell**	148
141	**One Crucial Step**	149
142	**A Tapestry of Minds**	150
143	**Bliss**	151
144	**They are Unstoppable**	152
145	**Beyond the Name**	153

1

हिन्द की बिंदी: हिन्दी

रासक से लेकर वीणा तक, विजयों से प्रेमी क्रीड़ा तक
आनंदमग्न से पीड़ा तक फैली दुनिया है हिन्दी की
क्या कहूँ हिन्द की बिंदी की।
कबिरा के अक्खड़ वचनों से, मीरा के फक्कड़ भजनों से
तुलसी के राम -प्रवचनों से, बगिया महकी है हिन्दी की
क्या कहूँ हिन्द की बिंदी की।
वे सूरदास के भ्रमरगीत, रसखान-कृष्ण की अमर प्रीत
हिन्दी कविता घन-घाम-शीत, अद्भुत महिमा है हिन्दी की
क्या कहूँ हिन्द की बिंदी की।
केशव का कठिन काव्य-कौशल, सुन्दर का अवगुण अविरल जल
कुतुबन, मंझन की कल-कल-कल, निर्मल सरिता है हिन्दी की
क्या कहूँ हिन्द की बिंदी की।
जायस की कविता का जौहर, आल्हा की रणभेरी का स्वर
भूषण की कविता की थर-थर, गाथाएँ विजय हैं हिन्दी की
क्या कहूँ हिन्द की बिंदी की।
नवयुगी इंदु थे भारतेंदु दिनकर को सुनने रुका सिन्धु,
दुष्यंत ग़ज़ल के चंद्रबिंदु गर्जन विशाल है हिन्दी की
क्या कहूँ हिन्द की बिंदी की।
जयशंकर की इतिहास-दृष्टि, महादेवी की घन-प्रेम वृष्टि
वह विहग पंत की काव्य-सृष्टि, है सूर्यकांति इस हिन्दी की।
क्या कहूँ हिन्द की बिंदी की।

रवि कुमार
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय सदलगा

2

हिन्दी हमारी माता

भारतीयता की पोषक है,

कोटि कोटि जन की भाषा है।

अपने-पन का भाव जगाती,

अपने आँगन की भाषा है।

कितनी भी भाषाएँ सीखो,

पर हिंदी को भूल न जाना तुम,

धन की भाषा चाहे जो हो,

पर हिन्दी मन की भाषा है।

माँ के दूध सरीखी मीठी,

हिन्दी को अपनाकर देखो।

झूम उठेगा मस्ती में मन,

गीत प्रीति के गाकर देखो।

निम्बा राम
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय डुंगरपुर

3

मैं हिन्दी हूँ, मेरी गाथा जगत ने गाई

वाणी में रचती, रस की गहराई।
संवेदन की रेखा बनकर, दूर तक छाई।
संविधान ने दी है मान्यता, राजभाषा की उपाधि पाई।
अनुच्छेद तीन सौ तैंतालीस में, मेरी छवि मुस्काई।
मैं हिन्दी हूँ, मेरी गाथा इस जगत ने गाई।

भक्ति काल की बाँसुरियों ने, मेरी गूँज सुनाई।
कबीर की उलटी बानी में, जीवन-धारा बहाई।
तुलसी की "मानस" से मैंने, मर्यादा की राह दिखाई।
मीरा की "पदावली" में, भक्ति सुधा भर आई।
मैं हिन्दी हूँ, मेरी गाथा इस जगत ने गाई।

महादेवी की "नीर भरी", दुख की गहराई।
निराला की "सरोज-स्मृति" में, एक पिता की सच्चाई।
दिनकर की "रश्मिरथी" में, कर्ण की गरिमा छाई।
नागार्जुन की कविता बन, बादल फिर से बन आई।
मैं हिन्दी हूँ, मेरी गाथा इस जगत ने गाई।

रेडियो से मंचों तक मैं, संवादों में समाई।
नाटक, लेख, कथाएँ बनकर, हर चेतन में छाई।
आज डिजिटल भारत में भी, मैंने अपनी राह बनाई,
एप्स, चैट और ब्लॉगों में, देवनागरी मैं बन आई।
मैं हिन्दी हूँ, मेरी गाथा इस जगत ने गाई।

पर एक करुण पुकार मेरी, क्यों पहचान धुंधलाई?
क्यों अंग्रेज़ी की चकाचौंध में, मेरी छवि भरमाई?
मैं माँ की ममता जैसी, क्यों उपेक्षित गई ठहराई?
मुझे अपनाओ, स्नेह जताओ, यही मेरी असली कमाई।
मैं हिन्दी हूँ, मेरी गाथा इस जगत ने गाई।

चलो मिलाकर स्वर सभी, एक हिंदीमय दीप जलाएं।
हर घर, विद्यालय, मंच पर, मुझको सिर चढ़ाएं।
मैं हिन्दी हूँ - रस की रचना, साहित्य की सच्चाई।
भारत माँ की वाणी हूँ, अक्षर-अक्षर मेरी परछाई।
मैं हिन्दी हूँ, मेरी गाथा इस जगत ने गाई।

महेश चंद मीना
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय मल्लेश्वरम

4

हिन्दी की व्यथा

हर साल दिवस यह आता है, हर बार नया कुछ लाता है!
कुछ यादें वहीं फरियादें नई, भूली बिसरी सब बातें वहीं
दोहराई जाती हैं फिर से, परचम लहराया जाता है
हिन्दी दिवस के जाते ही, हिन्दी को भुलाया जाता है!

मेरी हालत बुरी हुई, घबराई सी मैं फिरती हूँ
फेसबुक और व्हाट्सएप पर, हिंगलिश में बातें करती हूँ
हिंद देश की भाषा हूँ मैं, खुद को यह समझाओ तुम
कॉन्वेंट के नाम पर, बच्चों को ना बहकाओ तुम!

शर्म बहुत ही आती है आत्मग्लानी भी होती है
जब अंग्रेजी मुझ पर इठला कर हावी होकर यह कहती है!
तुम हिंद देश की भाषा हो..
पर क्या सच में आज, हर भारतवासी की अभिलाषा हो?
उस क्षण मैं ठुकराई सी लगती हूं, ठगी सी रह जाती हूँ
अपने ही देश में अपनों से, अपमानित होने लगती हूँ

हे! ज्ञानी मानो बहुत हुआ, गुणगान मेरा अब करो नहीं
सम्मान यदि तुम कर ना सको, अपमान मेरा तुम करो नहीं
कलयुग के इस चौबारे में, त्योहार मनाने आती हूँ
हर साल इन्हीं फिर गलियों में, शायद हिन्दी दिवस कहलाती हूँ!

शमसुन निसा
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (कला शिक्षा)
केन्द्रीय विद्यालय मधुपुरी, फतेहपुर

5

नए तराने गाएँगे

शिक्षा के उपवन में हम, अब नए तराने गाएँगे।
नवाचार अपनाकर, बच्चों को सिखाते जाएँगे ।।
सही समय प्रबंधन से ही, दुनिया जीती जाएगी।
ज्ञान के संग विज्ञान हो, तो नई रोशनी छाएगी ।।
इसी रोशनी की मशाल को, हाथों- हाथ थमाएँगे।
शिक्षा के उपवन में हम, अब नए तराने गाएँगे ।।
तक्षशिला -नालंदा की, सत-परम्परा के धावक हों।
कला-संस्कृति, प्रेम के ही वो ध्वज-वाहक हों ।।
संत-परम्परा के पालन को, नव पीढ़ी तक फैलाएँगे।
शिक्षा के उपवन में हम, अब नए तराने गाएँगे ।।
मन-मंदिर से सबके, जब तनाव की दूरी होगी।
जीवन की परीक्षा की, तभी तैयारी पूरी होगी ।।
परीक्षा की सफलता का, ख्वाब हंसी में सजाएँगे।
शिक्षा के उपवन में हम, अब नए तराने गाएँगे ।।
साँसों की ये पतली डोर, प्रकृति-प्रेम से बचेगी।
सुख से जिएंगे जीव सब, जब हरियाली रहेगी ।।
उड़ न जाए धरा की रंगत, चूनर धानी ओढ़ाएँगे।
शिक्षा के उपवन में हम, अब नए तराने गाएँगे ।।

परचम केन्द्रीय विद्यालय का, दुनिया में हम लहराएँगे।
करें प्रतिज्ञा भारत को फिर, विश्व गुरु बनाएँगे ।।
नई शिक्षा नीति का संदेश, जन-मन में फैलाएँगे।
शिक्षा के उपवन में हम, अब नए तराने गाएँगे ।।

अजय कुमार साहू
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय, मॉस्को

6

आओ बच्चों तुम्हें दिखाऊँ केन्द्रीय विद्यालय अपना

आओ बच्चों तुम्हें दिखाऊँ केन्द्रीय विद्यालय अपना,
सभी धर्म सभी प्रांत जैसे मिनी इंडिया हो अपना।
सुबह सुबह शुरू होती है सच्ची प्रार्थना यहाँ,
सावधान होकर हम लेते हैं प्रतिज्ञा यहाँ।
जनगणमन राष्ट्र गीत से सीना चौड़ा करते हैं यहाँ,
भारतमाता की जय से गूँज जगाते हैं यहाँ।
शिष्टाचार व अनुशासन सीखने की है भावना
सभी धर्म सभी प्रांत जैसे मिनी इंडिया हो अपना।

भाषा विज्ञान और गणित सीखते हैं हम यहाँ,
नए नए क्रिया कलापों से सब जानते है हम यहाँ
अपने सहाध्यायियों की मदद करते हैं हम यहाँ,
गुरुजी की मेहनत से अव्वल बनते हैं हम यहाँ।
खूब पढ़ेंगे खूब बढ़ेंगे पूरा करेंगे हर सपना,
सभी धर्म सभी प्रांत जैसे मिनी इंडिया हो अपना।

सह अभ्यासिक प्रवृतियाँ होती हैं खूब यहाँ,
बढ़ चढ़कर भाग लेता बच्चा-बच्चा यहाँ,
स्काउटिंग की जोरशोर से होती है प्रवृत्ति यहाँ,
खेलकूद के मैदान में खूब खेलते हैं हम यहाँ।
सेवा समर्पण और देशसेवा की है कामना
सभी धर्म सभी प्रांत जैसे मिनी इंडिया हो अपना।

जयेश केलर
प्राथमिक शिक्षक
केन्द्रीय विद्यालय ओ.एन.जी.सी चाँदखेड़ा, अहमदाबाद

7

मेरा केन्द्रीय विद्यालय निखर रहा है

शिक्षा के क्षेत्र में मील का पत्थर बन रहा है।
मेरा केन्द्रीय विद्यालय दिनोंदिन निखर रहा है।

संस्कृतियों का संगम यहाँ, है भाषा का विस्तार
विविधता में एकता यहाँ, यही है इसका आधार
उपलब्धियों के नित नूतन कीर्तिमान गढ़ रहा है।
मेरा केन्द्रीय विद्यालय दिनोंदिन निखर रहा है।

शिक्षा और संस्कार यहाँ, है यहाँ उत्तम व्यवहार
सर्वांगीण विकास का ध्येय यहाँ, है जीवन का श्रृंगार
सभी शिक्षा मानकों की कसौटी पर खरा उतर रहा है।
मेरा केन्द्रीय विद्यालय दिनोंदिन निखर रहा है।

जीवन का आदर्श यहाँ, है यहाँ भाईचारे का उपहार
विविध प्रांतों के बच्चे यहाँ, है यहाँ समन्वय का संसार।
शिक्षा के आकाश पर सूर्य सा चमक रहा है।
मेरा केन्द्रीय विद्यालय दिनोंदिन निखर रहा है।

एक भारत श्रेष्ठ भारत यहाँ, है तारा ऐप से भाषा परिष्कार
खेलो और फिट इंडिया यहाँ, है यहाँ योग का संस्कार
मेरा देश वापस विश्वगुरु बनने की और अग्रसर हो रहा है।
मेरा केन्द्रीय विद्यालय दिनोंदिन निखर रहा है।

दिलीप कुमार शर्मा
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय वायुसेना स्थल जैसलमेर

४

निराला केन्द्रीय विद्यालय अपना

पूरे भारत में फैला है जिसका उजियारा।
जो है भारतीय संस्कृति का ध्यान रखने वाला।
आधुनिक शिक्षा में भी है जिसका बोलबाला,
ऐसा है, हमारा केन्द्रीय विद्यालय सबसे निराला।

नवाचार को सबसे पहले लागू करने वाला।
खेल-कूद और विभिन्न कलाओं की शिक्षा देने वाला,
नई- नई शिक्षा पद्धतियों से बच्चों को पढ़ाने वाला।
ऐसा है, हमारा केन्द्रीय विद्यालय सबसे निराला।

ग़रीब बच्चों के जीवन में भी ज्ञानदीप जलाना।
आधुनिकता के साथ-साथ प्राचीन संस्कृति को बचाना।
सारी सुविधाओं के साथ बच्चों को आत्मनिर्भर बनाना।
ऐसा है हमारा केन्द्रीय विद्यालय सबसे निराला।

रविंदर
प्राथमिक शिक्षक
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय ए.जी.सी.आर कॉलोनी

९

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय ने, सपना साकार किया।
नन्ही आंखों में पलते, हर ख़्वाब को आकार दिया।
इस शिक्षा का ध्येय यही है, असतो मा सद्गमय।
बार-बार यह सिखलाता है, तमसो मा ज्योतिर्गमय।
माली जैसे हर पल शिक्षक, हमें संभाले परिसर में।
शिक्षा की कैंची से खरपतवार, छांटते पल-पल में।
जादू का एक दिया पिटारा, खेल खिलौने भर भर कर।
खेल पहेली, कठपुतलियां, चार्ट पुस्तकें और पोस्टर।
अक्षर और संख्याओं के संग, ज्ञान को एक आधार दिया।
एक सूत्र में रखकर सबको, समता का अधिकार दिया।
सर्वे भवंतु सुखिनः का, गुरु मंत्र मिला विद्यालय से।
भारत का कण-कण महकेगा, शिक्षा के संस्कारों से।
नया सवेरा हमसे है, नया सृजन भी हमसे है।
आसमान को छूने का, मजबूत इरादा हमसे है।
यहां भविष्य के बीज है पलतें, और शिक्षा के दीप जले।
उम्मीदों की किरण से जगमग, सपनों को भी पंख मिले।
सृजन करें हम खेल खेल में, खुलते हैं सपनों के द्वार।
पीएम श्री विद्यालय से ही मिले निपुणता और संस्कार।

उमा उपाध्याय
पुस्तकालयाध्यक्ष
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय डबरा

10

आत्मनिर्भर बने देश का हर बच्चा

मेरा केन्द्रीय विद्यालय मेरा अभिमान, चारों तरफ है इसकी शान,
हुआ निर्माण जिसका पंद्रह दिसंबर उन्नीस सौ तिरसठ,
लक्ष्य था जिसका भारत के नौनिहालों का चतुर्दिक विकास
कर रहा है उसके लिए हर संभव प्रयास।

खेल -खेल में ज्ञान सिखाए,
पुस्तकों के अतिरिक्त भार से बचाए
इसके विकास के ये हैं आधार
कम पैसे में मिले गुणवत्तापूर्ण ज्ञान का भंडार
आत्मनिर्भर बने देश का हर बच्चा
इसलिए करता नए- नए अनुसंधान
मेरा केन्द्रीय विद्यालय मेरा अभिमान।

है इसका ये संकल्प निराला
भविष्य हम ऐसा रचेंगे
सृजन के होंगे जहाँ नए-नए आयाम
छिपी प्रतिभा को खोज निकालेंगे
यहाँ का हर बच्चा गढ़ेगा एक नया इतिहास
तभी होगा संपूर्ण देश का कल्याण।

केन्द्रीय विद्यालय बच्चों को मानवता का पाठ है पढ़ाता
उन्हें जीवन मूल्यों की सीख है सिखाता
प्रतिभावान शिक्षक करते हैं जहां नए- नए प्रयास।
है कामना ईश्वर से,
फैले यश के.वि का चारों दिशाओं में
बने छात्र नए भारत के नए प्रवर्तक।

विश्व को नई राह दिखलाएंगे
अपनी इस संस्था से, भारत को विश्व मंच पर अग्रदूत बनाएंगे,
केन्द्रीय विद्यालय संगठन का परचम विश्व में लहराएंगे।

सैमुननिशा
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय पतरातू

केन्द्रीय विद्यालय

शिक्षा के जगत की आन, बान, शान और जान।
केन्द्रीय विद्यालय है भारत का अभिमान ।।

तमसो मा ज्योतिर्गमय की प्रार्थना के संग,
तकनीकी प्रयोग और स्मार्ट क्लास का दिखता रंग,
हर भाषा और जाति के विद्यार्थी इसका अंग,
इक्कीसवीं सदी के स्किल्स का सीखते ढंग।

केन्द्रीय विद्यालय है हिन्दुस्तान की शान
नवचेतना, नवशक्ति, नव निर्माण का है ये स्थान ।।

एक जैसा पाठ्यक्रम देता है छात्रों को राहत,
एन.सी.सी, कब्स बुलबुल, स्काउट, गाइड
कला उत्सव, एन.सी.एस.सी, एक भारत श्रेष्ठ भारत
पूरी होती है किसी भी क्षेत्र के ज्ञान की चाहत ।।

हर एक विद्यार्थी यहाँ पाता है नई उड़ान ।।
बनाया जाता है उसे राष्ट्र निर्माण का प्राण ।।

तत त्वं पूषन अपावृणु का सन्देश वाहक,
हर नई शिक्षा नीति का है ये ध्वज वाहक,
नैतिक शिक्षा और अनुशासन का धारक,
हर विद्यार्धी के ख़्वाबों को पूरा करने का चाहक

सी.बी.एस.ई, एन.सी.ई.आर.टी के नए प्रयोंगों का स्थान।
इसके शिक्षक और विद्यार्थी बढ़ाते हैं देश का सम्मान ।।

कविता कुमारी
प्राथमिक शिक्षक
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र. 1 ए.एफ.एस. पठानकोट

12

परीक्षा पे चर्चा

देश के शिक्षा की तस्वीर अब बदलने लगी है,
परीक्षा परिणाम की स्थिति सुधरने लगी है,
शिक्षित हो रहा देश का हर बूढ़ा और बच्चा,
जब से होने लगी है देश में परीक्षा पे चर्चा।

प्रधानमंत्री जी की बातों का असर दिखने लगा है,
परीक्षा परिणाम का डर भी अब मिटने लगा है,
तनाव रूपी समस्या से हर बच्चे की हुई है रक्षा,
जब से होने लगी है देश में परीक्षा पे चर्चा।

पढ़ाई के समय अब बच्चे रहते हैं कूल,
सभी दुःख, परेशानियों को वे जाते हैं भूल,
कुछ करने की जगी है हर बच्चे में इच्छा,
जब से होने लगी है देश में परीक्षा पे चर्चा।

बच्चे मानसिक रूप से मजबूत होने लगे हैं,
अभिभावक भी इसका सबूत देने लगे हैं,
हर बच्चा अब पहले जैसा नहीं है कच्चा,
जब से होने लगी है देश में परीक्षा पे चर्चा।
बच्चों के लिए पढ़ाई करना हो गया है आसान,
अभिभावक को भी नहीं होना पड़ता है परेशान,
दवाओं पर भी उन्हें नहीं करना पड़ता है खर्चा,
जब से होने लगी है हमारे देश में परीक्षा पे चर्चा।

विद्यालय से बच्चों का ऐसा रिश्ता बनने लगा है,
शिक्षक अब बच्चों को फरिश्ता लगने लगा है,
अध्ययन-अध्यापन पहले से हो गया है अच्छा,
जब से होने लगी है हमारे देश में परीक्षा पे चर्चा।

तनाव रहित होकर अब बच्चे पढ़ाई कर रहे हैं,
सफलता की नित नई-नई परिभाषा गढ़ रहे हैं,
खुश हो रहा है देश का हर एक बूढ़ा और बच्चा,
जब से होने लगी है हमारे देश में परीक्षा पे चर्चा।

विद्यालयों में सफलता रूपी कमल खिलने लगा है,
हमारे देश का भविष्य अब उज्ज्वल दिखने लगा है,
अब जाकर मिला है देश को एक प्रधानमंत्री सच्चा,
अब तो होने लगी है देश में परीक्षा पे चर्चा॥

आशीष मद्धेशिया
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय अंबिकापुर

13

परीक्षा पे चर्चा- प्रधान मंत्र

प्रधानमंत्री कृत प्रधान मंत्र
गिरहों का यह विषम तंत्र
खुलता-सुलझता चर्चा से सर्वत्र
पर इच्छा का यह सफल सत्र।

उदित उदय के प्रकाश पुंज
भर लें झोली ओ' ज्ञान कुंज
शिक्षा के ज्ञान, ध्यान, कर्म, कृत
कर अपने जीवन का व्योम अनंत।

गति चक्र, खान-पान, योग का
ध्यान चेतते गुरु मातृ-पितृ वृंद
छंद, रंजन औ विषयों का मनन
चलता रहता ये तारतम्य।

प्रातः भाष वंदन, अपराह्न गणित का मंथन
कंठस्थ विज्ञ, सामाजिक अध्ययन
जीवतंतु, संगणक का निरंतर चिंतन
समय पर दोहराव औ मानसिक मंथन।

ले उधार शिक्षा का मानधन
गुरू माता-पिता को, कर नमन
शिक्षा तो है जीवन भर का धन
पार कर दशम से द्वादश तक का चरण।

मेघा आपटे
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय राजनांदगांव

14

एक पेड़ माँ के नाम

चिंताएं सब मिट जाएंगी,
बन जाएंगे सारे काम,
बस, एक पेड़ माँ के नाम !

फल-फूल भरपूर मिलेंगे,
मुरझाए सब चेहरे खिलेंगे,
ऑक्सीजन की कमी ना होगी,
घट जाएंगे इसके दाम,
बस, एक पेड़ माँ के नाम !

राहगीर को छाँव मिलेगी,
एक नहीं हर गाँव मिलेगी,
पक्षी इन पर कलरव करेंगे,
हर सुबह, हर शाम,
बस, एक पेड़ माँ के नाम !

पेड़ लगेंगे ताप घटेगा,
धरती का संताप घटेगा,
जहाँ जगह हो पेड़ लगाएं,
चर्च, गुरुद्वारा,भगवन धाम,
बस, एक पेड़ माँ के नाम !!

डॉ. अरविंद कुमार शर्मा
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय क्र.4, दिल्ली छावनी

15

माँ, पेड़ और मिशन लाइफ

एक वृक्ष था—
जैसे माँ की गोद, स्नेह से भीगा,
धूप में छाँव, रातों में दीपिका।
हर मोड़ पर थामा उसने हाथ,
बिना कहे सिखा गया हर बात।

उसकी हर शाख थी एक कहानी,
हर पत्ता — जैसे जीवन की रवानी।
गर्म हवाओं में भी मुस्काया,
बिना शिकायत, बस निभाया।

अब वो वृक्ष है कुछ झुका हुआ,
वर्षों का अनुभव उसमें बसा हुआ।
शाखों में थकान, मगर जड़ों में शक्ति,
माँ जैसी ममता, गहराई में भक्ति।

हर ऋतु में जो देता था छाया,
अब खुद भी शीतल हवा को पाया।
मगर हर लहराती शाखा आज भी कहती—
"जीवन है सेवा, जीवन है सेवा।"

वो कहता—
"प्रकृति से प्रेम करो,
हर निर्णय में संतुलन भरो।
मिशन लाइफ को बनाओ शैली,
इसी में है जीवन की असली कहानी"

जब टूटी उसकी कोई डाली,
वो रोया नहीं, बनी प्रेरणा हर क्यारी।
सिखा गया—
"संरक्षण हो संस्कार हमारा,
प्रकृति न हो कभी पराया सहारा।"

माँ की तरह, वह मौन सिखाता,
हर पत्ती में करुणा जगाता।
वो बना शिक्षक, वो बना ध्येय,
जैसे KVS में संस्कारों का प्रवाह अजेय।

शिक्षा मंत्रालय का संदेश यही—
"प्रकृति से हो जीवन की गहन प्रीति।
मिशन लाइफ बने जीवन शैली,
जहाँ सह-अस्तित्व हो हमारी असली लाली।"

केन्द्रीय विद्यालय संगठन और भारत सरकार—
बचपन से बोते हैं वे बीज अपार।
संवेदनशीलता, सह-अस्तित्व, सतत विकास—
यहीं बने शिक्षा का अनमोल प्रकाश।

कहता है वृक्ष —
"मैं वृद्ध सही, पर चेतन हूँ,
हर सीख में आज भी नूतन हूँ।
आओ, थामो प्रकृति का हाथ,
इसी में है जीवन, इसी में है साथ।"

संदीप कुमार शर्मा
प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय ओ.एन.जी.सी. श्रीकोना, सिलचर

16

धरती माँ का श्रृंगार करें हम

धरती माँ का श्रृंगार करें हम, वृक्षों के परिधान से !
जागृत करें सभी को हम "एक पेड़ माँ के नाम अभियान" से ।
नारे, बातें बहुत हो गईं बातों का अब दौर गया ।

धरती माँ तो सब सह लेगी पर हम से सहा ना जाएगा
बाढ़, भूकंप, गंदी वायु से हम सबका जीवन जाएगा
अपने जीवन को लहलहाने हेतु धरती का पेड़ों से श्रृंगार करें
"एक पेड़ माँ के नाम" अभियान को साकार करें ।

प्लास्टिक के खतरों से हम सब अनजान नहीं
कूड़ेदान तक पहुँचा देना इसका यह तो कोई इलाज नहीं
और जला डालना तो सीधे मौत को दावत है
जाने इस कटु सच को, औरों को भी बताएँ हम
प्लास्टिक को न कहने की आदत को अपनाएँ हम

नारे-वादे बहुत हो गए, प्लास्टिक को हटाएं हम
कपड़े, जूट के थैलों को अब शान से अपनाएँ हम
धरती माँ का श्रृंगार करें, वृक्षों के परिधान से !
जागृत करें सभी को "एक पेड़ माँ के नाम" अभियान से ।

विभा रानी
प्राचार्या
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय खानपुर

17

पेड़ और पर्यावरण

हरियाली की शान हैं पेड़,
धरती के वरदान हैं पेड़,
साँसों की ये जान हैं पेड़,
जीवन का सम्मान हैं पेड़
छाया देते धूप में पेड़,
फल-फूलों का दान हैं पेड़
पक्षी गाते गीत यहाँ,
इनसे ही है मुस्कान यहाँ।

वृक्ष कटें तो सूखी हवा,
धरा हो जाए बेरवा।
बिन पेड़ न वर्षा आए,
सूखा और अकाल सताए।
पेड़ लगाओ, जीवन पाओ,
हरियाली फिर लौटाओ।

पर्यावरण का यही संदेश,
पेड़ बचाओ, यही आदेश।
चलो मिलकर प्रण ये लें,
हर वर्ष कुछ पौधे लगाएं
धरती माँ का मान बढ़ाएँ,
हर पेड़ को भगवान बनाएँ।

जानकी शरण
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय अंबिकापुर

14

हे भारत

वेगवान हो, वीर्यवान हो, हो विचारवान हे भारत।
है खड़ा दशानन खड्ग लिए, तुम जय युवान हो हे भारत॥
तुमको व्यापक भरमाने को, हर तरफ यहाँ हैं दूत खड़े।
काकोदार तुम्हे बनाने को, हर पग शत्रु के पूत खड़े॥
लेकिन तुम बनना नीलकंठ, सब विष पी जाना हे भारत।
गर किरण सुधापि हो न सको, तुम शलभ होना स्वीकार करो।
जब चारों ओर हो हाहाकार, तुम हो तटस्थ हुंकार भरो।
गर तुम वितान जो बन न सको, तो विहग हो जाना हे भारत।
हाँ, कष्ट बहुत हैं जीवन में, आराम से मृतक ही सोता है।
स्वविवेक, धीर, गंभीर ज्ञान को, मानव महान ना खोता है॥
गर चक्र सुदर्शन हो न सको, तुम चक्रव्यूह विस्तार करो।
ना पार्थ बनो, ना कर्ण बनो, अभिमन्यु होना हे भारत।

दीपशिखा गढ़वाल
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (अंग्रेजी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय सी.एम.एम. जबलपुर

19

मेरा देश महान है

भीम, भगत सिंह, आजाद-गाँधी और सुभाष की आन है।
अमिट-अभेद्य-अविचल रहें, ये मेरा देश महान है।
सीने पर गोली खाकर, फिर भी मुख पर मुस्कान है।
भारत माता की रक्षा करते, शहीद हुए वें जवान है।
अमिट-अभिद्य अविचल रहे ये मेरा देश महान है।

मानवता की बात कहे जो, सब धर्म समान है।
फिर क्यों द्वेष विकार से, मानव करता अपमान है।
अमिट-अभिद्य-अविचल रहे, ये मेरा देश महान है।

दिया संविधान ने न्याय-स्वतंत्रता, समानता का अधिकार है।
भूख-प्यास से व्याकुल रहें जनपालक किसान हैं।
अमिट-अभेद्य-अविचल रहे ये मेरा देश महान है।

भाषा, सांस्कृतिक विविधिता का, मिला प्रकृति का वरदान है।
अमिट-अभेद्य-अविचल रहे, मेरा गणतंत्र देश महान है।

अनिल कुमार मौर्य
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2 एफ.सी.आई. गोरखपुर

20

सबसे प्यारा देश हमारा

सबसे प्यारा देश हमारा
सभी सुखों की खान है
हर तरफ आनन्द यहाँ पर
अपना भारत देश महान है ।।

वीर प्रसूति भूमि यहाँ की
हर वीर पर अभिमान है
जहाँ सीस चढ़ा दिए माँ भारती को
वह भारत देश महान है ।।

सब धर्मों का संगम यहां
सबका आदर सम्मान है
गंगा-जमुनी तहज़ीब यहाँ की
अपना भारत देश महान है ।।

रसखान को जहाँ कान्हा प्यारे
कलाम को गीता का ज्ञान है
गंगा घाट पर शहनाई गूँजे
बिस्मिल्लाह का देश महान है ।।

हमीदा की सेवइयां प्यारी
सुखमनी की मिठाइयाँ हैं न्यारी
ईद-दिवाली मनती जहाँ अविराम है
सतरंगी रंगों वाला मेरा यह देश महान है

मन्दिर में हरिनाम का गुंजन
गुरुद्वारे की गुरुवाणी का अभिनंदन
मस्जिद की अज़ान है न्यारी
जीसस की प्रेयर बड़ी प्यारी
जहाँ सब धर्मों का सम्मान है
वह भारत देश महान है ।।

जहाँ आये बहुत पर ख़ाक हो गये
लुटेरे मज़हबी विचारों के
जहाँ गांधीवाद का दर्शन प्यारा
वह भारत देश महान है ।

जहाँ सत्य, अहिंसा का प्रिय नारा
जहाँ मानव धर्म का सार है
जहाँ प्रकृति का पूजन होता
यह ऐसा हिंदुस्तान हैं ।।

कमल कुमार मीणा
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय एन.एच.पी.सी. धारचूला

21

ऐसे उत्सव, ऐसी खुशियाँ

मन से मन का मेल बढ़ाते, खुशियों की सौगात है लाते
उत्सव ये भारत के अनगिन, जाति धर्म का भेद भुलाते।
नृत्य-गान की धूम मचाते, भारतवासी हंसते गाते
बिहू, पड़वा, ओणम आदि, नयी फसल का स्वागत करते।

होली, राखी, शिवरात्री और दीपावली मनभावन
लक्ष-लक्ष दीपों से उजला, यहाँ-वहाँ घर आँगन।
आसमान में चाँद-सितारा, उनकी करें इबादत
मुस्लिम भाई एक-दूजे को, कहते ईद मुबारक।

सांताक्लॉज का जिंगलबेल, उपहारों की रेलमपेल
मदर मेरी या हो जीजस, मेरी क्रिसमस मेरी क्रिसमस।
देश की रक्षा की ख़ातिर, जिन का जीवन हो चंदन
स्वतंत्रता गणतंत्र दिवस पर, करलो उनको वंदन।

ऐसे उत्सव ऐसी खुशियाँ
खिल जाती भारत की हर गलियाँ॥

अभया देशपांडे
प्राथमिक शिक्षक (संगीत)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय रेंजहिल्स, पुणे

22

ऑपरेशन सिंदूर

खून बहा जो पहलगाम में भारत गुस्से से हुआ चूर,
मिटा दी दुश्मन की हस्ती लो आया ऑपरेशन सिंदूर।

क्या गलती थी उन लोगों की जो आए थे प्यारे कश्मीर,
अपने वतन का हिस्सा है, वो सुंदर है जिसकी तस्वीर।

नाम पूछकर धर्म को जाना क़त्ल-ए-'आम किया भरपूर,
खून बहा जो पहलगाम में भारत गुस्से से हुआ चूर।

हम वो हिन्दुस्तानी हैं जो दुश्मन को करते हैं न माफ,
अगर दोबारा की हरकत तो नक्शे से हो जाओगे साफ।

ये देश है वीर जवानों का और यहां के सैनिक शूर,
मिटा दी दुश्मन की हस्ती लो आया ऑपरेशन सिंदूर।

भारत के हर हिस्से को हमने बड़े जतन से सजाया है,
सारे धर्म के बीच साथियों प्यार ही प्यार समाया है।

रुक जाओ; बेरहम कातिलों हो जाओ बंदूक से दूर,
वरना फिर मटियामेट करेगा भारत का ऑपरेशन सिंदूर।

दिनेश यादव
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय तिरुमलगिरि

23

हम पंछी आज़ाद वतन के

हम पंछी आज़ादा वतन के,
नया तराना गायेंगे।
सेवा के पथ पर सब साथी
मिलकर कदम बढ़ायेंगे।
हम पंछी...

आसमान से दूर गगन तक
देश का नाम करेंगे हम
मस्तक ऊँचा हो भारत माँ का
माँ वो काम करेंगे हम।
अपने सद्कार्यों से जग में,
देश का मान बढ़ायेंगे।
सेवा के पथ पर सब साथी
मिलकर कदम बढ़ायेंगे।
हम पंछी...

कर्म ही अपनी पूजा है,
और श्रम से हमारा याराना,
और सफलता का रहस्य है
अनुशासन हमने जाना।
दृढ़ निश्चय का मंत्र हो
फिर जो चाहेंगे वो पायेंगे।
सेवा के पथ पर सब साथी
मिलकर कदम बढ़ायेंगे।
हम पंछी...

ना केवल अपने हित
अपितु सबके हित का ध्यान रहे,
पशु-पक्षी के साथ प्रकृति के,
मानवता का द्वंद्व मिटे।
ईश्वर की हम श्रेष्ठ हैं रचना,
साबित कर दिखलायेंगे।
सेवा के पथ पर सब साथी
मिलकर कदम बढ़ायेंगे।
हम पंछी...

पंकज कुमार तिवारी
प्राथमिक शिक्षक
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय अम्बिकापुर

24

समय का महत्व

समय एक नदी की तरह बहता है,
हर पल नई राह दिखाता है।
कभी धीमा, कभी तेज़, लेकिन कभी रुकता नहीं,
यह केवल चलता है, चलता ही जाता है।

समय में छिपी होती हैं अनगिनत कहानियां,
कुछ बीती, कुछ आने वालीं यादें- जो समझे इसे, वह सच्चा विजेता बनता है,
जो इसके साथ चलता, वही सच्चा रास्ता पाता है।

वह दिन भी आता है जब समय पर हमें भरोसा होता है,
कभी मिलती है सफलता, कभी सीखने का मौका होता है।
बुरा वक्त आता है, तो समय ही उसे सुलझाता है,
और अच्छे वक्त में समय ही उसे सहेजता है।

कभी लगती है रात लंबी, और दिन बहुत छोटा,
लेकिन समय ही सिखाता है, सब कुछ है पल भर का।
जो आज तुम करते हो, वही कल तुम्हारी पहचान बनेगा,
समय कभी नहीं रुकता, यह तो तुम्हारी यात्रा का हिस्सा है।

समय को समझो, न खोओ इसे,
ये अमूल्य रत्न है, जानो इसे।
यह वो पल है, जो फिर कभी लौट कर नहीं आता
हर घड़ी अनमोल है, ये समझ में तब आता है
जब समय हाथ से फिसल है जाता।

हरमीत सिंह
कनिष्ठ सचिवालय सहायक
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय से.12, द्वारका

25

लक्ष्य का पथ

जीवन की उलझी डोरी हो
रेखा भविष्य की कोरी हो
डगमग विश्वास लगे मन का
इच्छाओं का विलसित तन हो,

तब ध्येय, लोक में आने का
अविचल गति से फलते जाना
बाधाएं आएं आने दो
कर एक लक्ष्य चलते जाना है

जब लगे कहीं निरूपाय हृदय
शीतलता हो भुजदंडों में
जब नयन थके विश्राम कहें
पर मन हो लक्ष्य तरंगों में,

है वही रास्ता माझी का
जो काट निकाले पाहन को
तुम बना लेखनी इस्पाती
जलते जाना ढलते जाना,

उत्कीर्ण हुए जो नाम अमर
इतिहासी पथ पर गए उभर
प्रेरक हो राष्ट्र समर्पण का
इस आशा से स्वातंत्र्य समर
हमको ही मूल्य चुकाना है
यह विश्वगुरु चमकाना है
शोणित को स्वेद बना करके
कंटक पथ पर चलते जाना, बाधाएं आएं आने दो
कर एक लक्ष्य, चलते जाना है

वीरेश कुमार पाण्डेय
प्राथमिक शिक्षक
केन्द्रीय विद्यालय 59 वीं वाहिनी एसएसबी नानपारा, बहराइच

26

कितना कठिन है सरल हो जाना

कितना कठिन है सरल हो जाना,
मन की ख़ुशी को हँसी में दिखाना,
दिल के दर्द को आँसुओ में बहाना।

कितना कठिन है सरल हो जाना,
अपनी गलती पर स्वयं को उत्तरदायी ठहराना,
दूसरे की भूल को मन से पूरा मिटाना।

कितना कठिन है सरल हो जाना,
सच को मानते हुए साथ खड़े हो जाना,
झूठ को जानते हुए उसे आईना दिखाना।

कितना कठिन है सरल हो जाना,
प्यार है तुमसे तुम्हें ये बताना,
परेशानी में तुम्हें गले से लगाना।

कितना कठिन है सरल हो जाना,
बात को अपनी सीधे शब्दों में कह जाना,
उलझी गुत्थियों को समझदारी से सुलझाना।

कितना कठिन है सरल हो जाना,
अनुकूल परिस्थितियों में गिरने से बचना ,
प्रतिकूल परिस्थिति में अडिग बने रहना।

कितना कठिन है सरल हो जाना,
रूठे को मनाना, रोते को हँसाना,
कितना कठिन है सरल हो जाना।

संगीता ज़ैदी
प्राचार्या
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय मुरादाबाद

27

जिजीविषा

ओ आकाश!
तुम फट पड़ो चाहे
पर, तुम खत्म कर सकोगे क्या
धरती की उर्वरा शक्ति को
बार-बार शस्य-श्यामल हो
सृजित होता रहेगा जीवन

ओ कालकूट!
तुम्हें रख लूँगा हलक में
उतर सकोगे न उदर में न उगलूँगा बाहर
मैं जीवित रहकर बचा लूँगा
कितने ही जीवन

ओ वेदना!
न तुम मृत्यु से बड़ी हो
और ना जीवन से
अनवरत, असफल यह मन
हार नहीं सकता तुमसे
क्योंकि हर संघर्ष से बड़ी है
मेरी अनंत, अटूट,
अदम्य जिजीविषा।

डॉ. सत्य प्रकाश व्यास
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र.1 इंदौर

28

मैं पाठ पढ़ाने आई थी, तुमने जीवन पढ़ा दिया

तुम जब पहली बार मिले थे मुझसे,
इस विद्यालय के प्रांगण में।
तुम देख रहे थे बस इधर-उधर,
कुछ उलझन थी तुम्हारे मन में।

मैंने देखा-तुम सबसे अलग थे,
हर सोच और व्यवहार में।
तुम्हारा हर डर, हर झिझक,
मेरे लिए एक सीख थी।

मैं पाठ पढ़ाने आई थी,
तुमने जीवन पढ़ा दिया।
मैंने किताबें खोली थीं,
तुमने आईना दिखा दिया।

मैंने सोचा था, मैं सिखाऊँगी,
पर तुमसे ही तो सीखा मैंने।
हर बच्चा एक दुनिया है,
ये सच दिखलाया है तुमने।

मैं अब शिक्षक नहीं रही,
मैं अब सीखने लगी हूँ।
समावेश मात्र विषय नहीं,
अब मैं इसमें ढलने लगी हूँ।

नीलम कुमारी
प्राथमिक शिक्षक
केन्द्रीय विद्यालय सीआरपीएफ झपहां, मुजफ्फरपुर

29

अपना गाँव

सड़कें बस्ती गली मोहल्ले सब है पर ठांव नहीं,
पर्वत ताल नदी जंगल सब है पर अपना गाँव नहीं ।।
जीवन सर्कस मन बस आहत सब कुछ सहते जाते है,
बिन मंज़िल बस चलता जीवन पर कोई ठहराव नहीं ।।
कड़ी प्यास में मर-मर के एक आस जगाते जीवन की
लगे दौड़ने सपनों की खातिर देखा तो एक पाँव नहीं ।
अपने खोकर सपने बुनकर मंज़िल हमने पाया है
प्यार बांटकर देख लिया अब रिश्तों का कोई भाव नहीं ।।
कठिन राह है दूर लक्ष्य है फिर भी पार उतरना है
यत्न सदा करता रहता हूँ पर भवसागर में नाँव नहीं ।

डॉ. सगीर अहमद
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय एफएनआर गुवाहटी

30

अत्यधिक अधिकता

कभी-कभी रूखे भी हो, अतीव सरलता ठीक नहीं
सरल विटप कट जाते हैं, सर्वदा सज्जनता ठीक नहीं ।।
अगर करे आहट कोई और
क्षमा निरंतर करते हो,
नहीं बड़प्पन माने पर
आहत ही करते रहते वो,
अजब चलन है दुनिया का, सर्व सहज सुगमता ठीक नहीं ।
सागर खाली हो जाता, अतिरेक मधुरता ठीक नहीं ।।

माना अहम दोष व्यापक,
अच्छाई से है दूर जरा,
स्वाभिमान का रूपांतर ही
जब होता मगरूर जरा,
स्वाभिमान से सुलह नहीं, पर अहम प्रचुरता ठीक नहीं ।
मर्यादित अनुशासित हो पर भूरि सौम्यता ठीक नहीं ।।

हृदय हमारा कोमल वन
हरियाली सदा बचाना तुम,
किसी को ऊष्मा देने को
इसमें मत आग लगाना तुम,
भावुकता बेमोल यहां, खल हेतु मृदुलता ठीक नहीं ।
न्यायोचित जैसे को तैसा पर सदा निठुरता ठीक नहीं ।।

सहज रहो उपलब्ध अगर
नाकारा समझे जाओगे,
हुए अगर प्रतिकूल कभी
गुब्बारा तब कहलाओगे,
जीवन का कौशल दुष्कर, पर निठुर कुशलता ठीक नहीं ।
मध्यम मार्ग सदा बेहतर, अत्यधिक अधिकता ठीक नहीं ।।

सुमन सिंह
स्नातकोत्तर शिक्षक (अंग्रेजी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय संभाजीनगर छावनी

31

सपने उनके सच होते हैं

सपने उनके सच होते हैं,
जो बोते बीज विश्वास का
श्रम से उसको सींच निरंतर,
काटते जो रोज़ आलस की खरपतवार,
स्वच्छ रखे अपने आचार-विचार,
और अनुशासन की धार पर सोते हैं,
सपने उनके सच होते हैं।

करते सद्वचनो का अनुसरण,
आदर्शों के जीवन से ले प्रेरणा,
समझे जो सुभाषितों को जीवन का सार
बहते जाएँ जैसे नदियाँ की धार,
और सीप के मुख में खुद मोती पिरोते हैं,
सपने उनके सच होते हैं।

चाहे हो कड़ी धुप, चाहे अँधेरा घना
गरजे बादल तूफानी, चाहे हो सामने पर्वत खड़ा
लू के थपेड़े सनसनाए या सर्द हवाएं लहराएँ,
हो सिंह का गर्जन या मृत्यु का नर्तन
रोक न सकती जिनको दुर्बलताएं
अड़कर लेते लोहा और नहीं भाग्य पर रोते हैं
सपने उनके सच होते हैं।

हो जाता व्योम प्रदीप्त जब,
लाती मद्राचल की गति सागर में ज्वार तब,
कालकूट का तिमिर मिट जाता है,
असंभव संभव हो जाता है,
और लिए अमृत कलश प्रकट देव तब होते हैं,
सपने उनके सच होते हैं,
जो बोते बीज विश्वास का

दिप्तीकीर्ति दास
स्नात्तकोत्तर शिक्षक (अंग्रेजी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय पतरातू

32

बारिश का मौसम

बारिश का मौसम और खिड़की के बाहर का दृश्य
दोनों ही मनमोहक होते हैं
कभी घने बादल, कभी साफ मौसम की बारिश
दोनों ही पृथ्वी को भाते हैं।

छज्जों से टपकती बूंदें और बारिश की फुहारों का गुनगुनाना,
चिड़ियों का खिड़कियों और रोशनदानों पर आकर चहचहाना
जब ये दृश्यों का संयोग आंखों में तैर जाता है,
मन को अत्यधिक प्रफुल्लित और प्रसन्नचित कर जाता है।

ये अभी पिछले तीन दिनों की बात है,
मैं अकेला खिड़की के समीप बैठा करता था
सड़क खाली, यातायात ठप, बाजार सुनसान
बस खुद से ही यही बातें किया करता था।

कि...

कहां और कैसे रहते होंगे ये पशु और पक्षी
कब और क्या खाते होंगे ये मूक जीव प्राणी
क्या वे भी निराश होते होंगे जैसे हम शीघ्र चिढ़ जाते हैं
प्रकृति के इस कृत्य से तुरंत परेशान हो जाते हैं।

वैसे...

अमीरों को बहुत भाती होंगी ये लंबी बारिश
न रहने-खाने की चिंता, ना पैसे का दुःख
खान-पान, गान-बजान, हँसी-ठिठोली और
आनंद के साथ मिलता होगा अपनों का सुख

लेकिन...

जब बात गरीबों की, दैनिक मजदूरों की आती है
तो शरीर सुन्न और मन विचलित सा हो जाता है,
क्योंकि उनको घर चुभता होगा, चूल्हे बुझे पड़े होंगे
आखिर वे क्या कह कर अपने बच्चों को समझाते होंगे।

लगातार बारिश होना भी कितना कष्टदायी होता है
कच्ची सड़कें, मिट्टी का घर और आम जन जीवन त्रस्त होता है
गरीब और किसान गहरी चिंता में डूबे जाते हैं,
और हम खिड़कियों के पास बैठकर बारिश का आनंद लिए जाते हैं।

विद्यासागर आर्य
कनिष्ठ सचिवालय सहायक
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय गोमोह

33

पिता

पिता जब थे तो उतने नहीं थे
जितने के अब हैं
पहले उनके होने का एक टाइम होता था
एक नियम होता था।
नहाना-धोना
पूजा-पाठ
उठना-बैठना
आना-जाना
कब कहाँ होंगे
कब घर से जायेंगे
कब घर आयेंगे
सब तय था।

हमारी बदमाशियों पर उनकी डाँट,
देर तक सोते रहने पर नसीहतें,
और उनकी कुछ तय सूक्तियाँ थीं,
अनगिनत कहानियाँ थीं
जिनको बिना किसी काँट-छाँट के अपने बच्चों को
सुनाता हूँ
आज वो नहीं हैं, तो
कुछ भी तय नहीं है
वो कभी भी आ जाते हैं
किसी भी दिशा से आ जाते हैं।
वक्त बेवक्त कुछ भी नहीं देखते हैं
बस आ जाते हैं
नसीहतों हिदायतों की झड़ी लगा जाते हैं
डाँटते तो पहले से भी ज़्यादा हैं।
जब मैं बच्चों की ज़िद से झल्ला जाता हूँ तो
मेरे जेहन में मुस्कुरा जाते हैं।
उनका मुस्कुराना किसी मरहम से कम नही है।
पर, पिताजी मैं नहीं चाहता आप मेरे ऊपर हँसे
मैं आपके पदचिह्नों पर ही तो चल रहा हूँ
जानकर अनजान बन जाता हूँ
नदी किनारे की चट्टान बन जाता हूँ
घुलता रहता हूँ
रेत बनकर बहता रहता हूँ
कब तक टिका रहूँगा
कह नहीं सकता।
जितना आपने सहा उतना
सह नहीं सकता।

आपने कितना कुछ सहा था,
पर कब किसी से कहा था ?
भीतर ही भीतर दुख को पी लेते थे
घनघोर तूफान में भी जी लेते थे
मैं अब भी नहीं सीख पाया हूँ ये कला
न सिखाकर मुझे क्यों छला ?
खैर तब नहीं सिखाए तो अब सिखाइए
कोई भी राज मुझसे न छिपाइये
आपके बिना कैसे आगे बढ़ पाऊँगा
दुनिया बड़ी ही कठोर है
कैसे इससे लड़ पाऊँगा !

चिंता मणि सिंह
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय क्र.1 बोकारो

34

किताबें

किताबें हमारे जीवन की साथी हर पल साथ निभाती हैं
आत्मनिर्भर हमें बनाती जीवन में काम ये आती हैं।
किताबें ही रूबरू कराती सृष्टी के हर विषय से
समान ज्ञान प्रदान कराती भेद न करती व्यक्ति से।

किताबें ही करती समृद्ध जीवन के स्वरूप को
किताबें ही है निर्मित करती व्यक्ति के हर रूप को।
ज्ञान संवेदना और कौशल किताबों से ही अर्जित हैं
भेद, ईर्ष्या, लोभ, द्वेष, अवगुण इनमें वर्जित हैं।

विज्ञान गणित कला इतिहास समाये इसके पन्नों में
भूगोल साहित्य अर्थशास्त्र वाणिज्य शामिल इनके हिस्सों में।
भाषा के हर पहलू को किताबें ही व्यापक बनाती हैं
तकनीकी के उच्च स्तर को किताबें ही विस्तार कराती हैं।

साक्षारता की नींव किताबें सफलता का आयाम किताबें
ज्ञान का आधार किताबें समाज का सम्मान किताबें।
बुद्धि के हर स्तर को किताबें ही पुष्ट बनाती हैं।
किताबें हमारें जीवन की साथी हर पल साथ निभाती हैं।

सोनू कुमार
कनिष्ठ सचिवालय सहायक
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय से. 28, रोहिणी

35

संघर्ष

संघर्षों की नैय्या खेकर
पार सभी को जाना होगा
जब तक सांसें धड़कन हैं
प्रयास मंत्र का गाना होगा,
सूर्य किरण से ऊर्जा लेकर
मुख पर चांद खिलाना होगा।

लहरों के संग तो शव बहतें हैं
विपरीत धार में बहने वाला
जल पर जीवन लिख जाता है,
तो हार नहीं कुछ भी जीवन में
शब्दों का केवल ताना बाना है
जीत गए हो सब कुछ क्यों न
सौ हार गले में लगाना होगा
तुम चक्रव्यूह के अभिमन्यु हो
हर द्वार पे तुमको लड़ना होगा।

मनीष कुमार शर्मा
प्राथमिक शिक्षक
केन्द्रीय विद्यालय नर्मदानगर

36

मन की बात

कहै युवराज जथा मति-वाणी, करहुँ कृपा हे वीणापाणी !
अथ 'मन की बात'

जन-जन से संवाद को, मंगलमय शुरुआत।
मोदी जी करने लगे, हमसे मन की बात।

अक्टूबर तृतीया,
भाव उठत मन माँहि जब।
मन की बात अनूप,
होय परस्पर कथन तब।

भारत स्वच्छ होय प्रण मोरा, सुख-समृद्धि होय चहुँ ओरा।
कचरा कंचन होय सुजाना, गोवर्धन इंदौर प्रमाण।
जल-संग्रह कीजिए विधि नाना, भूजल होय भविष्य के प्राना।
नारी-शक्ति महत्व बतावा, विविध प्रशिक्षण शिविर चलावा।
जब भय मुक्त परीक्षा होई, अधिगम सुगम बनावहि सोई।
पीएम श्री विद्यालय कीन्हा, शिक्षा नीति छात्र-हित दीन्हा।
नूतनवर्ष सुमंगल होई, नाम अनेक भाव सम होई।
उपजे पुष्प वनस्पति नाना, अंतरिक्ष उपवनहि समाना।
भार अधिकता घातक होई, कम घृत-तेल स्वास्थ्यकर सोई।

योग-प्रयोग लाभप्रद जाना, महिमा सकल जगत पहिचाना।
खेलकूद सबके मन भावा, 'खेलो इंडिया' नाम कहावा।
बस्तर ओलंपिक मनभावन, कीन्ह शुभंकर 'नैना' पावन।
'जन-औषधि' पावा सब कोई, अल्प मूल्य, अमृत-सम होई।
कृष्ण-कमल कुसुमहि मुसकाई,'नगर-एकता' सबहि सुहाई।
मानहुँ लंक-विजय तेही कीन्हा,'मित्र-विभूषण' गौरव लीन्हा।
कंबन सेतु प्रयोग नवीना, राजकाज किय होहि प्रवीण।

नाम 'सिंदूर' आक्रमण भारी, भारत सैन्य शक्ति भयकारी।
पुनि ब्रह्म्मोस शत्रुक्षय कीन्हा, मारहिं ड्रोन दर्प सब छीना।
भय बिनु प्रेम होय नहीं भाई, जगत सुने तामे प्रभुताई।

जाके मन उपजै नहीं, राष्ट्र प्रथम का मंत्र।
वाणी निरर्थक जानिए, भग्न मानिए तंत्र।

युवराज कुमार शर्मा
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (संस्कृत)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र.1 इंदौर

37

जीवन गीत

जीवन गीत गाते चलो
मधुर संगीत सुनाते चलो
सफ़र का सुर लिए चलो
जीवन आनंद गाते चलो

सुगन्धित बगिया से महकाते चलो
फूलों के रंग बिखराते चलो
भौरों के संग गुनगुनाते चलो
तितली से मन बहलाते चलो

सुरज से चमकते चलो
जग में रोशनी फैलाते चलो
तारों से मुस्कुराते चलो
चांद सी सादगी भरके चलो

पहाड़ों से महान बने चलो
चढ़ाई में मजबूत बने चलो
ढलानों में धीरज धरे चलो
नदी से निर्मल बहते चलो

खेतों से लहराते चलो
पेड़ों से बलखाते चलो
हवा से ताल मिलाते चलो
जीवन गीत गाते चलो।

संजय कुमार
प्राथमिक शिक्षक
केन्द्रीय विद्यालय पाटण

38

एक अनूठा माँ का प्यार

शब्द संकुचित हो जाते हैं, अर्थों का होता विस्तार।
ऐसा ही होता है जग में, एक अनूठा माँ का प्यार।।

त्याग, समर्पण, स्नेह , वत्सला, देवी की मूरत होती है।
आपत्ति में साथ न छोड़े, माँ तो माँ ही होती है।।

स्वार्थ निरत है यह जग सारा, माँ का बस अपना परिवार।
ऐसा ही होता है जग में, एक अनूठा माँ का प्यार।।

खुद के पेट को काट-काट कर, आजीवन वो पालती है।
दुःख चाहे हो जीवन में पर, सुख की राह ढालती है।।

सच्चा माँ जैसा न कोई, माँ होती घर का श्रृंगार।
ऐसा ही होता है जग में, एक अनूठा माँ का प्यार।।

बड़े भले ही हो जाएं हम, माँ की नज़र में छोटे हैं।
चिन्ता में कभी नींद न आए, तो गोद में माँ की सोते हैं।।

हर संकट से पार कराए, माँ जीवन की है पतवार।
ऐसा ही होता है जग में, एक अनूठा माँ का प्यार।।

नज़र उतारे, राख लगाए, माथे को फिर चूमती है।
बच्चों के चेहरे पर माँ बस, सदा खुशी ही ढूंढती है।।

देखो माँ के प्यार के आगे, है झूठा सारा संसार।
ऐसा ही होता है जग में, एक अनूठा माँ का प्यार।।

डॉ. प्रीतम पोखरियाल
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (संस्कृत)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय पुष्प विहार

39

मेरा पहला कदम स्कूल की ओर

माँ, मेरा पहला कदम जब स्कूल में पड़ा,
डर और उलझन का बादल मन पर चढ़ा।
आशा थी कोई अपनों सा साथ दे,
तभी द्वार पर टीचर मिलीं — जैसे तू खड़ी रहे।

तिलक किया माथे पर, मुस्कुराकर बोली,
तेरी तरह ही ममता में शब्द वो घोली।
उसने पकड़ी मेरी ऊँगली चुपचाप,
डगमग पाँव को मिला सहारा आप।

मन में थोड़ी रौशनी, डर थोड़ा कम हुआ,
तेरी छाया-सी कोई पास कदम-दर-कदम हुआ।

नए चेहरे दिखे, नए भाव नजर आए,
कुछ जैसे अपने, कुछ थोड़े सकुचाए।
कुछ डरे-सहमे, कुछ चुप से खड़े,
कुछ बोलते खूब — जैसे मन में सजे।

बातों में उलझे, मुस्कानों में घुले,
कुछ दोस्त बने — दिल के इतने खुले।

माँ, तेरी ममता की छाया सी लगी,
स्कूल भी अब अपना सा लगा।
तेरा आशीर्वाद बन कर साथ चला,
मेरा पहला कदम, सपनों की ओर बढ़ चला।

सीमा चौधरी
मुख्य अध्यापिका
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय जीरकपुर

40

नवसृजन का पर्व

तिनका-तिनका जोड़ भावनाओं का,
बनाऊंगी एक घर कल्पनाओं का,
बनी होगी नींव जिसकी मेरे प्रयासों की,
खड़ी होंगी दीवारें उसपे मेरे कयासों की,
हमारी सफलता की उसपे छत पड़ी होगी,
विद्या के नये सफर पे जिंदगी खड़ी होगी।
उस घर को संस्कारों के फूलों से सजाऊँगी,
दूसरों की पीड़ा मिटा खुद को जोड़ पाऊँगी,
दरवाज़े पे अनुशासन का किवाड़ लगाऊँगी,
आदर्शों की चौखट पे दीप जलाऊँगी।
वादा है, बिखरने न दूँगी विश्वास की डोर,
बस तुम दे दो एक अवसर, एक छोर।
उस आँगन में पुस्तकों की छाया होगी,
जहाँ हर बच्चे में ज्ञान की माया होगी,
जहाँ शिक्षक बनें दीपक और पथदर्शक,
और विद्यार्थी हों देश के उज्ज्वल मार्गदर्शक
चलो, इस घर को अब नाम दे दें,
'केन्द्रीय विद्यालय' का अभिमान दे दें,
जहाँ सीखना हो जीवन का उत्सव,
और हर दिन हो नवसृजन का पर्व।

शिवम कुमार सिंह
प्राथमिक शिक्षक
केन्द्रीय विद्यालय क्र.1, जिपमेर कैंपस, पुडुचेरी

41

किस भाषा में बताऊँ

कितना सुंदर, अद्भुत, निराला, मनमोहक, ये दुनिया का कोना-कोना,
समझ में आए दुनियाँ मुझको, पर समझा किसी को पाउँ ना।
ये किस भाषा में बताऊँ, मेरी भाषा किसी को आए ना

रंग-बिरंगी बगिया में फूल, तितलियों का इतराना,
और कैसे बयाँ करूँ उन, भौंरों का गुनगुनाना।
कितना सुंदर! ये किस भाषा में बताऊँ, मेरी भाषा किसी को आए ना

नीला आसमां, खुला गगन है, पंछियों का उड़ना,
चाँदनी रात की भूरे बादल पर, चाँद-तारे हैं गहना।
कितना अद्भुत! ये किस भाषा में बताऊँ, मेरी भाषा किसी को आए ना

लहरी वादियों की चोटी पर, इंद्रधनु का मंडराना,
हिमालय पर सफेद बर्फ का धीरे-धीरे गिरना।
कितना मनमोहक! ये किस भाषा में बताऊँ, मेरी भाषा किसी को आए ना

गाँव की गलियों में देखो, बच्चों का शोर मचाना,
पिट्ठू, खो-खो, गिल्ली-डंडा,
दूल्हा-दुल्हन- खेल-खिलौना।
कितना मजेदार! ये किस भाषा में बताऊँ, मेरी भाषा किसी को आए ना

भूख से नन्हे बालक का रोना, बछड़े के पीछे गैया का दौड़ना,
माँ का गुस्सा -कान मरोड़ना, प्यारी यशोदा मैयाँ की तुलना।
कितनी निराली! ये किस भाषा में बताऊँ, मेरी भाषा किसी को आए ना

पिता के कंधे पर बैठना, पूरे मेले का आनंद उठाना,
मैच बैठकर स्टेडियम में देखना, 'इंडिया इंडिया' शोर मचाना।
कितना जोश! ये किस भाषा में बताऊँ, मेरी भाषा किसी को आए ना

सेना का तेवर, दुश्मन से लड़ना, वीर गति की ना परवाह करना,
हर एक दुश्मन को ढेर करना, आखिरी ख्वाब तिरंगे में लिपटना।
कितना देश प्रेम! ये किस भाषा में बताऊँ, मेरी भाषा किसी को आए ना

कुंभ मेले में डुबकी लगाना, रथ यात्रा पर डोरी खींचना,
तिरुमला को पैदल चलना, अमरनाथ की कतार में चढ़ना।
कितनी भक्ति! ये किस भाषा में बताऊँ, मेरी भाषा किसी को आए ना

हज़ारों लाखों भाषा बोलके, बयां करते भाव अपना,
नसीब वाले जिन्हे आता बोलना,
पर मैं गूंगा देखूँ सपना, बता पाऊँ जो देखी दुनियां।
कितना दुर्भाग्य! ये किस भाषा में बताऊँ, मेरी भाषा किसी को आए ना

बिश्व बाग़
प्रशिक्षण सहयोगी
(पुस्तकालय)
आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, भुवनेश्वर

42

ईश्वर से मेरा नाता

मैं नदी नहीं पानी की धारा हूँ
मैं मूरत नहीं मिट्टी का गारा हूँ
तेरे उपकार व सहयोग से ही
नीलगगन का छोटा सा तारा हूँ

तू मुझमें मैं तुझमें समाया हूँ
मैं कुछ नहीं बस तेरा साया हूँ
तो मोह व माया का मारा हूँ

तेरी रहमत का कोई पार नहीं
तेरी कुदरत में जीवनसार तो है
तेरे निर्देशों को आधार बनाकार
इस जीवन में रंग भर लाया हूँ

तू कुम्हार तो मैं तेरा घड़ा जैसा
बिखरी माटी को दिया आकार ऐसा
कि इस जीवन में काम आया तो
इस बात से अपने पर इतराया हूँ

तू माली तो मैं तेरी बगिया जैसा
सींचा है तूने तू है माँ के जैसा
खुशबू और सुंदरता की पहचान बनकर
नवीनता का आभास मैं कर पाया हूँ

मैं कहां था क्या था ये नहीं है पता
मैं के छल में पढ़कर की वो खता
कि मैं उससे निकल ना पाया था
तू ना होता तो मैंने जीवन गवांया था

तुझसे मिलकर ही समझ पाया हूँ
कि हूँ मैं मेहनत ममता की
मैं ही मोहब्बत मानवता हूँ
इस जीवन में अभी तक भरमाया था
कि तुमसे मिलने पर समझ पाया हूँ

कामिनी सिंघल
स्नातकोत्तर शिक्षक (संगणक विज्ञान)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय जनकपुरी

43

उड़ान

अरे ओ साथी, मुझे भी उड़ना सिखा दे
छू लूं मैं भी ऊंचाइयां आसमानों की,
युक्ति कोई ऐसी मुझे भी दिखा दे,
अरे ओ साथी मुझे भी उड़ना सिखा दे।

उड़ता जाऊँ इस अनंत नभ में निर्भीक होकर,
छू लूं सारी हदें इस गगन की मैं मुक्त होकर,
ऐसी कोई तालीम, ऐसी कोई दिशा दे.
अरे ओ साथी मुझे भी उड़ना सिखा दे।

फैलाकर पंख अपने, इस खुले आसमान में उड़ जाऊं,
दे साहस इतना मुझे की आसमानों से भिड़ जाऊं,
पथ पर बढ़ता रहूँ निरंतर तूफानों से भी लड़ जाऊं,
ऐसी ही कोई तरकीब मुझे भी सिखा दे,
अरे ओ साथी मुझे भी उड़ना सिखा दे।

रहूँ हमेशा आगे बढ़ता, मुसीबतों से न घबराऊँ,
कभी ना हारू साहस अपना, कभी न मैं पीछे मुड़ जाऊँ,
ऐसा ही कोई दिव्यांश मुझे भी दिखा दे,
अरे ओ साथी मुझे भी उड़ना सिखा दे।

रवि कुमार खरेटिया
प्रधानाध्यापक
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय रतलाम

44

बस यूं ही ...

वो वक्त,
जब तुम तैयार नहीं थे उतरने को मेरी गोद से।
और मैं चाहती थी कि,
कोई और तुम्हें ले जाए थोड़ी देर के लिए,
ताकि मैं कर लूं दुनिया जहान के सारे काम,
और कर लूं सब घर भर को खुश।

वो वक्त...

जब तुम सुनाना चाहते थे मुझे दिन भर की सारी बातें, सारे किस्से।
कहते थे...
पता है मां, आज क्या हुआ ?
आपको पता है ये, पता है वो ...
और मैं कहती थी
रुको जरा
बाद में सुनूंगी
अभी जरा थोड़े घर के काम तो कर लेने दो।

और ...

मैं काम करती रही।
तुम बड़े होते रहे।
और तुम्हारी सारी बातें बाद के लिए जमा होती रहीं।
तुम बाहर जाते, फिर मुझे देखने आते।
कि बस जरा-जरा सी मैं तुम्हें दिखती रहूं।
जैसे कि बस मैं ही तब तुम्हारी दुनिया थी।
और फिर तुम्हारी दुनिया बड़ी होती गई, और
मेरी काम की मजबूरियां भी।

और अब...

जब मैं चाहती हूं कि तुम मुझे बस दिख जाओ।
कुछ कहो, कुछ सुनो, या फिर बस देखने ही आ जाओ।
क्योंकि तुम ही अब मेरी दुनिया हो।
लेकिन अनकहा सा मुझे सुनाई देता है,
मां... बाद में।
और हम दोनों ही जानते हैं कि,
बाद में तो कुछ नहीं होता।

अर्चना श्रीवास्तव,
पुस्तकालयाध्यक्ष
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय, सीहोर

45

खुद की तलाश

निकल चला जब खुद की तलाश में तू,
तो क्यों साथी ढूंढ रहा।
चलना अकेले ही है इस राह में,
तू क्यों राह है पूछ रहा।
तू बनना चाहे जोत तो,
पुँज बनके दिखाना होगा।
खुद को रोशन करना बस नहीं,
जग से अँधियारा मिटाना होगा।
जब लक्ष्य पर्वत चीरने का है तो,
पहले पथ पत्थरों को मिटाना होगा।
निकालनी है गर भागीरथी पत्थरों से,
तो तुझे अपना लहू भी बहाना होगा।
एक बार अपना अस्तित्व पानें के लिए,
मिट्टी में तुझे मिल जाना होगा।

पूनम ठाकुर
प्राथमिक शिक्षक
केन्द्रीय विद्यालय एस.ई.सी.एल.धनपुरी

46

हम विशेष बच्चे

निपुण एवं एफ.एल.एन से युक्त होकर के,
विद्या प्रवेश एवं नई शिक्षा नीति से संयुक्त होकर के,
हम बनेंगे विशेष बच्चे ।।

आदर्श एवं सत्य के पथ पर चल करके,
अपने जीवन में ज्ञान का उत्सव भर करके,
हम बनेंगे विशेष बच्चे ।।

योग और व्यायाम से खेल-कूद के अभ्यास से
लक्ष्य को साधकर, केन्द्रीय विद्यालय के स्वाभिमान से
हम बनेंगे विशेष बच्चे ।।

आओ मिलकर दीप जलाएं, इस युग का अज्ञान मिटाएं
चलो सबको जागरूक बनाएं, पर्यावरण को स्वस्थ्य बनाएं
फिर हम बनेंगे विशेष बच्चे ।।

पवन कुमार
प्राथमिक शिक्षक
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय न्यू कैंट, प्रयागराज

47

जिंदगी चली गई

बहुत सी ख्वाहिशें थी इस जिंदगी से,
जिसे पूरी होते-होते जिंदगी चली गई
जिंदगी के इस फलसफे को कईयों ने समझाया,
पर समझते-समझते जिंदगी चली गई।
काश हमें इस जिंदगी से अपेक्षाएं न होती
तो ये जिंदगी ऐसी न होती।
उम्र के इस पड़ाव पे रिश्तों को संवारते
आखिर थक गए हम।
कौन थे, क्या थे, कहाँ आ गए हम
गर जीना है अगर खुल कर जीयो
जो होता है उसे होनी समझ होने दो
रिश्तों के भँवर में यू न उलझो
कि सभी दूर होते चले जाए।
कई मुश्किलों से मिली ये जिंदगी
कई मुद्दतों से मिली ये जिंदगी
आखिर क्यू इस तरह चली जांए।

अर्चना कुमारी
वरिष्ठ सचिवालय सहायक
केन्द्रीय विद्यालय मोतिहारी

48

माँ

कमियां तेरी निकाल सकूं वो दृष्टि कहां से लाऊँ मैं
बनूं सहारा तेरा मैया बस वह संबल बन पाऊँ मैं
हक़ तेरा थपकी दे या थप्पड़ से नहला दे
क्या कीमत मेरे जीवन की जो तुझको दे पाऊँ मैं
संबंध जगत में जितने हैं सबको ही निभाता जाऊँ मैं
उन सबका आधार जगत में कर्ज़ा तेरा दे पाऊँ मैं
मुझको जीवन देने वाली भगवत्ता से ऊपर है
हक़ नहीं मुझे तुझको तेरी कोई कमी बतला पाऊँ मैं
पीड़ा तेरी कितनी थी उस हद को काश समझ पाऊँ मैं
मुझे मारने से पहले मरती थी वो क्षण कहां से पाऊँ मैं
उस क्षण विशेष की उत्पत्ति के सब साधन थे हत्यारे
ममत्व धार तू जूझ रही थी काश उन्हें समझा पाऊँ मैं

तुझको दुख देने वालों को कैसे अपना पाऊँ मैं
पीड़ा तेरी हर ना पाया कैसे उसको गले लगाऊँ मैं
और साधनों दीवारों से घर कोई यदि बन पाता
तो ममत्व से वंचित वाले उस घर कैसे जाऊँ मैं
तुलना तेरी वसुधा से और गंगा से अब पाऊँ मैं
माफ सभी को करने वाली तेरे जैसा दिल पाऊँ मैं
अपना-अपना पाप सभी ने तेरी झोली में डाला
सबको पावन करने वाली को कैसे मैला पाऊँ मैं
कमियां तेरी निकाल सकूं वो दृष्टि कहां से लाऊँ मैं
वो दृष्टि...कहाँ से... लाऊँ मैं...

विजय कुमार सोनी
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (अंग्रेजी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय रतलाम

४९

बदलती प्रकृति के संग

वो भी दिन थे, जब बाग़ों में बहारें मुस्कुराती थीं,
हरियाली की चादर ओढ़े, वादियाँ गुनगुनाती थीं।
नदी बहती थी लहरों संग, जैसे कोई राग सुनाती थी,
पर्वत, पंछी, पेड़ सभी में, जीवन रास समाती थी।

इस संसार में इंसान ने बदले कई रंग
प्रकृति ने समय के साथ बदले अपने ढंग
मासूम और भोले जीव देख ये सब दंग
हर तरफ दुनिया मे फैली है जंग

अब देखो कैसा मंजर है, न धूप है, न छाँव सही,
कहीं बाढ़, कहीं सूखा आया, तो कहीं तूफ़ान बही।
पेड़ों के कटने की पीड़ा, अब बादलों में गूँजती है,
धरती की छाती दरकी है, नदियाँ रो-रो सूखती हैं।

हवा में जहर सा घुल गया, साँसें भी डरती हैं,
आग लगी जंगल-जंगल, चिड़ियाँ भी अब मरती हैं।
पिघलती बर्फ़, गरम समंदर, सब संकेत दे जाते हैं,
प्रकृति के कोप में अब हम ही बर्बादी लाते हैं।
किसने छीना ये सुख चैन? इंसान की है ये करनी,
लोभ, क्रोध, छल की भाषा, अब उसकी जीवन धरणी है।
पेड़ को काटा, जल को बाँधा, पर्वत की मर्यादा तोड़ी,
सत्ता, धन और स्वार्थ की खातिर, हर संवेदना है छोड़ी।

प्रकृति माँ है — हमने उसको बाज़ारों में तौला है,
अपने ही घर को आग लगाई, फिर क्यों उसका रोना है?
अब भी समय है, चेतो मानव! लौट चलो उस राह पर,
जहाँ प्रेम हो, संतुलन हो, प्रकृति चले अपने सहज स्वर में।

रुपेन्द्र रामचरण मेश्राम
स्नातकोत्तर शिक्षक (संगणक विज्ञान)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय आर्मी एरिया, पूणे

50

खाली पन्ने, अकुलाए शब्द

रूठने, रूंधने लगे हैं शब्द मेरे
कुछ समय, उम्र और जिम्मेदारियों तले
सोचती हूँ करूंगी पैने, दूँगी धार
शनैः शनैः, धीरे-धीरे, हौले-हौले
उठाती हूँ कलम जब कभी
"कुछ लिख ले" कहते हैं अपने सभी

एक पूरा ब्रह्मांड है
मेरे मन मस्तिष्क में विचारों का
कुछ स्व, कुछ समाज, चंद हिस्सा समाचारों का
ज्यों उकरते हैं अकुलाए शब्द पन्नों पर
तभी भटकता है ध्यान, सतर्क हो जाते हैं कान
गैस पर चढ़े उफ़नते दूध की आवाज़ से
सीढ़ियाँ चढ़ते बच्चों के चिर परिचित अंदाज़ से
अशक्त माँ की काँपते हाथों से खोलते-बंद होते दराज़ से

जिंदगी के पटल पर जिम्मेदारियों का आसमान है,
कामकाजी महिला का माँ होना कहाँ आसान है,
मैंने चुना है मैं तो माँ हूं, मालकिन हूं, घर की सर्वज्ञ हूं
ममतामयी मर्मज्ञ हूं
तभी तो ठहर जाते हैं शब्द
सहम जाती है कलम, फड़फड़ाते हैं खाली पन्ने,
उठ जाती हूं हिम्मत के सारे हिस्से बटोर कर
शब्दों को पिरोने की इच्छा मन में मसोस कर, मरोड़ कर

इंतजार कर लेंगे शब्द, कहाँ रुकता है जीवन का प्रारब्ध
समय फिर से लौटेगा,
जब करूंगी पैनी, दूँगी धार
जहाँ शब्द कलम और मैं,
यही होगा मेरा संसार ।।

सारिका सिंह
स्नातकोत्तर शिक्षिका (अंग्रेजी)
केन्द्रीय विद्यालय ओ.एन.जी.सी. देहरादून

51

समर-ओज

तिलक लगाऊँ !
थाल सजाऊँ !
वीर शौर्य गाथाएं गाऊँ !
या आंचल में ले लाल को अपने,
केश सुलझाउ ?
सुन भेरी युद्ध की रण में,
मन ही मन घबराऊँ,
कोख लजाने को क्या रण से
वीर को अपने पीठ दिखा कर लाऊँ ?
जिनके घर के पिता पुत्र, जो ना युद्ध में शीश कटाते हैं,
वही क्या हरदम साहस भर युद्ध-युद्ध चिल्लाते हैं ?
जब भगत ने जवानी को अपने संघर्षों में झोंका होगा,
क्या उसकी मां ने भी उसको रो-रो कर रोका होगा ?
या वह भी मां गूजरी जैसी सिंह सी गर्व में ललकारी होगी ?
जिस दिन मां का ऋण-उऋण करने को भगत ने दी किलकारी होगी।
जब राजा रतन सिंह ने तलवार उठाई होगी,
क्या थाल सजा शूरवीर राजा की पत्नी भी घबराई होंगी ?
या साहस भर क्षत्राणी ने उसे रण में भेजा होगा ?
जहां एक ओर जौहर का दीया भी सज रहा होगा !
जब बेटी भूखी कई रात सोयी होगी,
क्या महाराणा प्रताप की आंखें ना रोयी होंगी ?
जब सोचा परिवार देश में एक को बचाना होगा,
तय किया वीर बाला चंपा ने कि अब गहरी नींद सो जाना होगा।
जब-जब हम अपनों के खोने के भय से,धर्म से आंख चुराएंगे !
तब-तब उन शूरवीरों के बलिदानों को मिट्टी में मिलाएगें।
प्राण रहे या ना रहे; प्रिय रहे या ना रहे,
धर्म रहा है धर्म रहेगा, देश रहा है देश रहेगा।
जब तक हर भारतवासी के तन में रक्त बहेगा !

रूपाली त्रिपाठी
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (अंग्रेजी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र.1, बी.ई.जी.सी. रुड़की

52

नारी सशक्तिकरण

उमंगों सी भरी,
नित कर्तव्य पथ पर चली,
परिंदों सी उड़ान उसकी,
नव किसलय सी मुस्कान उसकी,
हौंसलों की बांध डोर,
ऊर्जा समेट चहुं ओर,
दृष्टि में भर उल्लास,
आवाज में उसके ओज,
आशाओं की चुनरी ओढ़,
उर में आनन्द हिलोर,
सच्चरित्र सीता सी,
रण में दुर्गा सम,
विद्या सरस्वती बन देती,
लक्ष्मी सम पूज्यवान
फूलों की माला में गूंथे जैसे फूल,
करती परिवार को एकत्र समूल,
धरा पर पावन गंगा सम,
शीतल वृक्ष छाया सदृश,
करुणा का सरोवर समेटे,
है वह गुणखान,
सभी की परवाह करती,
कहते हैं उसे हम नारी! महान् !

श्रुति पालीवाल
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (संस्कृत)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र.1, बी.ई.जी.सी. रुड़की

53

अब कोई नया मनुष्य जन्म ले !

नस्ल और जाति का न भेद हो
गरीब मुक्त हो न कोई खेद हो
धर्म पंथ का भी न कोई विभेद हो
मात्र मानवता का ही सन्देश हो
बस सभी के मन में यही सोच हो
अब कोई नया मनुष्य जन्म ले !

ज्ञान हो विज्ञान हो,
नित नया विधान हो
सभी समस्याओं का निदान हो
न राष्ट्र हो न राष्ट्र का आकार हो
वैश्विक मानवता का सपना साकार हो
कोई नया मनुष्य जन्म ले !

नित कई कला और संगीत हो
गाने को रोज नया गीत हो
सच्ची एक-दूजे से प्रीत हो
मानवता की ही बस जीत हो
रीत नई कुछ भी न विपरीत हो
अब कोई नया मनुष्य जन्म ले !

खोज हो अनुसंधान हो
आतंक का कहीं न नाम हो
दिग्-दिगांत शांति का ही धाम हो
न कोई निराश हो, न भूख हो, न प्यास हो
हर तरफ उल्लास ही उल्लास हो
हास हो, परिहास हो, मानवता का विकास हो
अब कोई नया मनुष्य जन्म ले !

डी पी थपलियाल
स्नातकोत्तर शिक्षक (अर्थशास्त्र)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय रायवाला, देहरादून

54

एक शिक्षक की चाह

कैसे अपना सर्वश्रेष्ठ दूं समझ नहीं पाता हूँ,
आधा अधूरा पाता हूं तो कसमसा जाता हूँ।
और क्या-क्या करूं सोच में पड़ जाता हूँ।

कुछ कमी न रह जाए
यह सोच नए कार्यों में लग जाता हूँ।
चाहता हूं पूर्ण हो जाए सब
चाह कर भी ऐसा नहीं कर पाता हूँ,
तब असमंजस में पड़ जाता हूँ।

काश, सुधार हो सभी में
पर ऐसा हो नहीं पाता है
किस से क्या-क्या सीखूं
ढूंढने निकल जाता हूँ
कैसे अपना सर्वश्रेष्ठ दूं समझ नहीं पाता हूँ।

इस भोले-भाले मन को कैसे सुलझाऊं,
इस उलझन में पड़ जाता हूँ।
इन से तार से तार जुड़ जाए
तो धन्य हो जाऊं
कैसे पूर्ण हो जाए सब सोच में पड़ जाता हूँ।

नीरु जौहर
प्राथमिक शिक्षक
केन्द्रीय विद्यालय हल्द्वानी

55

कहाँ गई वो भोजन थाली ?

कहां गई वह भोजन थाली
जब सब कुछ सादा-सादा था।
ना था केसर, ना था पिस्ता
पर स्वाद तो सबसे ज्यादा था।

स्वाद तो अपनेपन का था
स्वाद तो संग में खाने का था।
सुख दुख बांटे, थाली पर ही
मिल बांटकर खाने का तो,
एक अंदाज निराला था।

कहां गई वह भोजन थाली ?

संग में बैठे दादा-दादी
संग में बैठे पोता-पोती
हंसी ठिठोली करते थे
एक अनूठा बंधन था।
जब तक खाना सज कर आता
किस्सों और कहानी में
जीवन सार बताते थे।

कहां गई वह भोजन थाली ?

थोड़ा-थोड़ा जो भी होता
थोड़ा-थोड़ा सबको मिलता
ना कुछ ज्यादा, ना कुछ कम
थोड़ा-थोड़ा सब में बंटता
सब में सबका हिस्सा होता।

कहां गई वह भोजन थाली?

खाने को, पहले अर्पण करना
आभार जताना, इस जीवन का
अन्नपूर्णा माता का,
ॐ सहनाववतु सह नौ भुनक्तु
आभार मंत्रोचार था।

कहां गई वह भोजन थाली ?

स्वच्छ मन से, स्वच्छ तन से
स्वच्छ भोजन, समय से खाना।
अन्न धन की रक्षा करना
भोजन की बर्बादी ना हो
ऐसा उपाय, और जतन करना।
जूठन न बचे थाली में
कुछ न जाए नाली में
ऐसे संस्कार सिखाते थे।

कहां गई वह भोजन थाली ?
जब सब कुछ सादा सादा था
ना था केसर, ना था पिस्ता
पर स्वाद तो सबसे ज्यादा था।

निधि रावत
स्नातकोत्तर शिक्षक (जीव विज्ञान)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय पौड़ी

56

संगठन की शान

अपना केन्द्रीय विद्यालय संगठन,
मानवता नित करता साकार है।

शिक्षा जीवन का आधार
अनुशासन से हमको प्यार है।
धर्म जाति वर्ग वर्ण भेद नहीं
शिक्षा सबको एक समान है।

कदम-कदम निर्माण को बढ़ते
भारत के विकास को हम गढ़ते,
जल- थल आकाश झट लांघते
अंतरिक्ष सा ज्ञान अपनी आन है।

चंदन सी परंपरा सदा निभाते
जीवन मूल्यों के पाठ पढ़ाते,
अभिनव हो व्यक्तित्व सबका
उपवन संस्कारों का अपार है।

कक्षा में कौशल प्रयोग उपजते
विद्या को शिक्षक जीवन समझते,
श्रम से सींचा है इस आलय को
मिले श्रेष्ठ नागरिक यही संसार है।

नन्हे दीपों में हम बाती सजाते
सूरज सी चेतना सबमें जगाते,
दूर हो अंधकार मन आंगन का
अपावृणु में संगठन की शान है।

अपना केन्द्रीय विद्यालय संगठन,
मानवता नित करता साकार है॥

संदीप नेमा 'दीप' भोपाली
सहायक अनुभाग अधिकारी
के.वि.सं. क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल

57

गुलमोहर ख्वाब में उतर आया

गुलमोहर ख्वाब में, उतर आया
गुलमोहर ख्वाब में
उतर आया,
मैने आंखे खोलीं,
सामने-तुमको पाया,
फिर खिली झील,
एक-रंग-छाया,
मैने आंखे खोलीं,
सामने-तुमको पाया,
गुलमोहर ख्वाब में,
उतर आया,
मैने आंखे खोलीं,
सामने-तुमको पाया !

धूप ने, सिलबट्टे पर,
मली थी चांदनी, नजाकत – से,
देखा था, पर – बातों ने,
जुगनूओं-को, शरारत से,
जमी थी, शहतूत की महफ़िल,
रुपहले – शोख, आँगन में,
था-तब, चांद भी,
वहां-हौले से, हिफाजत से,
खुशबु का, एक दरिया,
खुद – ब – खुद, निखर आया,
मैने आंखे खोलीं,
सामने-तुमको पाया,
गुलमोहर ख्वाब में,
उतर आया,

बताशों ने,
गिनकर रखे थे,
पल मुलायम, मर्तबानों में,
हवा भी, छूकर गयी थी,
कुछ गुनगुनाती, कानों में,
रेशम एक तस्वीर,
मोर- पंख से, ढाँकी थी,
बूंदों ने, रचा था,
एक किस्सा, आँगन में,
बादलों ने, घर अपना,
फिर-पलकों को – बतलाया,
मैने आंखे खोलीं,
सामने-तुमको पाया,
गुलमोहर ख्वाब में,
उतर आया,
मैने आंखे खोलीं,
सामने-तुमको पाया !

अवनि प्रकाश श्रीवास्तव
प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय बैकुंठपुर

54

मातृभूमि की पावन माटी

मातृभूमि की पावन माटी, अपना शीश लगाते चलो,
इसकी गौरव गाथा के, तुम गीत सदा ही गाते चलो।
फ़र्ज़ निभाया है पहले, कई देशभक्त और वीरों ने,
तुम भी अपने कर्तव्यों को, हँसते हुए निभाते चलो।
द्वेष भरी आतंकी आंधियाँ, अंधेरा कर दें ना कहीं,
देश प्रेम की दिव्य मशालें, अपने मन में जलाते चलो।
शर्म सभ्यता पर हमला अब, हो रहा निस दिन पश्चिम का,
अपनी मर्यादित संस्कृति को, नंगेपन से बचाते चलो।
मर मिटना इस देश की खातिर, बहुत बड़ी कोई बात नहीं,
ऋण चुकाना है माटी का, हंस के ऋण चुकाते चलो।
इच्छाशक्ति दृढ़ होगी, मजबूती आएगी मन में,
वंदे मातरम वंदे मातरम, यही जयकार लगाते चलो।
रुकते नहीं मंजिल के राही, बीच डगर में यूँ सागर,
लक्ष्य तक निर्बाध गति से, अपने कदम बढ़ाते चलो।

डॉ. संजय कुमार आमेटा
प्राथमिक शिक्षक (संगीत)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय बांसवाड़ा

59

शून्य से संवाद

जब थम गईं सारी आवाज़ें,
और बाहर का कोलाहल चुपचाप गिर पड़ा,
तब भीतर से आई एक पुकार —
"क्या अब सुन सकोगे मुझे" ?

मैं ठहर गया।
श्वास के आर-पार झाँका,
सोचा- कौन है यह जो
इस गहन मौन में संवाद कर रहा ?

ना शब्द थे,
ना अर्थ।
बस अनुभूति की एक सधी हुई लहर,
जो मेरी सत्ता को स्पर्श कर रही थी।

वह शून्य था —
न कोई रंग, न रूप, न गंध,
फिर भी सबसे पूर्ण।
मैं उससे पूछ बैठा —
"तू कौन है" ?

उत्तर आया —
"जो तुम्हारे 'मैं' के पीछे छिपा है,
जो सोच से पहले था,
और मृत्यु के बाद भी रहेगा।
मैं स्तब्ध था।
शून्य ने मुझे मेरे ही प्रश्नों से खाली कर दिया।
अब कोई उत्तर शेष नहीं था,
और शायद प्रश्न भी नहीं।

वहीं, उसी मौन में,
जहाँ विचार रुकते हैं,
जहाँ पहचानें पिघलती हैं,
मैंने जाना —
शून्य कोई रिक्तता नहीं,
वह तो पूर्णता की पहली अनुभूति है।

डॉ. गौरव शर्मा
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (संस्कृत)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2 अम्बाला छावनी

60

गीत पराया गाऊँ तो लज्जा आती है

संदर्भों की बात करूँ तो दरिया है वो,
और स्मृति के आलोकों में मैं जो झांकू।
पास थिरकते नन्हे कदमों की यादों में,
मैं अपने बचपन के सब किस्सों को बांचू।
ऐसे किस्सों से आँख मेरी भर आती है।
गीत पराया गाऊँ तो लज्जा आती है।

कभी सुनाकर लोरी माँ थपकी देती थी,
बहना बाबू जी से हमें बचा लेती थी।
भैया हमको छोटे पापा जैसे लगते थे,
गुल्लक के पैसे हमको छुटकी दे देती थी।
खुशियाँ बचपन की अब भी याद आती हैं।
गीत पराया गाऊँ तो लज्जा आती है।

कॉलेज का वो पहला दिन कैसे भूलेगा,
जूते पॉलिश, वस्त्र इस्त्री, इत्र लगाया।
नया भवन और नए इरादे, नई उमंगें,
कुछ बनने का हमने भी फिर जोर लगाया।
भूरी आँखों वाली अब भी याद आती है।
गीत पराया गाऊँ तो लज्जा आती है।

सुंदर सपने अक्सर मैं देखा करता हूँ,
इसी धरा पर किसी के रोके कौन रुका है।
भूल बुरी बातों को आगे बढ़ता रहना,
गूढ़ रहस्यों को कोई कब समझ सका है।
विस्मृत होकर भी अक्सर वो याद आती है।
गीत पराया गाऊँ तो लज्जा आती है।

जीवन जीना है तो नित बढ़ना ही होगा,
अपने कर्तव्यों को पूरा करना ही होगा।
डिगते कदमों को सुपथ पर ले जाना है,
खुद अपनी ही बुरी नजर से बचना होगा।
दादी-नानी हमको ये ही सिखलाती है।
गीत पराया गाऊँ तो लज्जा आती है।

रोज परिंदे नभ में जाकर खूब विचरते,
साँझ ढ़ले वापस घरोंदों में आ जाते हैं।
दूर कहीं भी कितना ही चले जो जाओ,
अपना घर अपना है यह पंछी सिखलाते है।
रंगीं दुनियाँ किसी की हमको न भाती है।
गीत पराया गाऊँ तो लज्जा आती है।

अनिल कुमार
सहायक अनुभाग अधिकारी
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय हजरतपुर

61

बहन-भाई का प्यारा रिश्ता

बचपन की वो मीठी बातें, झगड़े और मनुहार,
एक रोटी में आधा-आधा, सिमटा था सारा संसार।
वो आपस में चुटकी लेना, छिपकर मिठाई खाना,
माँ की डाँट से, एक दूसरे को मिलकर बचाना।

राखी की वो सुनहरी सुबहें, हाथों में दुआओं की डोर,
भाई की कलाई पर बहन का अपार गौरव और जोर।
चुपचाप गिरते आँसुओं को झट से समझ जाना,
बिन कहे एक-दूजे के भाव को झट से पहचान जाना।

जब डर लगे अँधेरे से, भाई बन जाए दीवार,
और बहन की मुस्कान में हो, हर दर्द का उपहार।
वो छोटे-छोटे तोहफे, जो दिल को छू जाएं,
चंद शब्दों में स्नेह, जो जीवन भर साथ निभाएं।

वक़्त भले ही दूरियाँ लाए, पर दिलों की हो न दूरी,
बहन-भाई का ये रिश्ता है, आपस में प्यार है ज़रूरी।
कभी आंसू, कभी हँसी, तो कभी गुस्से की बारिश,
न शिकवा, न शिकायत, बस अपनापन बेहिसाब,
यही तो है प्रेम, नाप से परे, हर रंग में लाजवाब।

योगेश कुमार
वरिष्ठ सचिवालय सहायक
केन्द्रीय विद्यालय संगठन (मु.)

62

मंजिल तुझको मिल जाएगी

तू कदम बढ़ा विश्वास जगा मंजिल तुझको मिल जाएगी,
तू लहरों को पतवार बना मंजिल तुझको मिल जाएगी।

तू हार के डर से घबराकर कोशिश करने से मत थमना,
तू जीतेगा या सीखेगा बस बात यही मन में रखना,
विश्वास अगर है दृढ़ कदमों में हर मुश्किल झुक जाएगी,
तू लहरों को पतवार बना मंजिल तुझको मिल जाएगी।

कुछ रोकेंगे कुछ टोकेंगे मंजिल को कठिन बताएँगे,
कुछ आकर तेरी राहों में उपहास के शूल बिछायेंगे,
तू राह से मत डिगना इच्छा इक दिन पूरी हो जाएगी,
तू लहरों को पतवार बना मंजिल तुझको मिल जाएगी।

तुझमें सूरज सा तेज वायु सा वेग गगन सी मस्ती है,
पर्वत का सीना चीर सके तेरे भीतर वो शक्ति है,
सर्वस्व भस्म कर सतत कर्म मंजिल खुद चलकर आएगी,
तू लहरों को पतवार बना मंजिल तुझको मिल जाएगी।

जब तक है तन में सांस करो संघर्ष यही तो जीना है,
रख आस समंदर पास जहर नैराश्य तुम्हें क्यों पीना है,
कर ख़ामोशी से कर्म सफलता इक दिन शोर मचाएगी,
तू लहरों को पतवार बना मंजिल तुझको मिल जाएगी।

डॉ. योगेश कुमार जैन
पुस्तकालयाध्यक्ष
आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, ग्वालियर

63

हर कदम, एक पहचान

आओ जीवन की **दहलीज़** में कुछ इस तरह चलें
मेघ बनकर चलें नीर बनकर ढलें
ना रुकें ना सोचें चलना दूर है
बढ़ते ही जाएं आगे सफलता जरूर है
चलें कुछ ऐसे कि हर कदम एक पहचान छोड़ जाए
बोलें कुछ ऐसा कि हर शब्द एक **फ़लसफ़ा** बन जाए
उज्ज्वल प्रखर मधुरिम बन तम को हरते जाएं
स्वप्नों की सरिता में स्नेहिल नौका से बहते जाएं
कोशिशों के धरातल से अभिलाषाओं के शिखर तक
हर प्रयास की सार्थकता से आशाओं के क्षितिज तक
आगे ही बढ़ते जाएं हम
पर शिखर को छूने की अभिलाषा में
ध्यान रहे बस इतना
कहीं संवेदना का धरातल न छूटे
स्नेह का बंधन अपनों का साथ न छूटे।

मंगला धौनी
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2, भारतीय सर्वेक्षण विभाग, देहरादून

64

तू किस्मत कब तक रुठेगी ?

तू किस्मत कब तक रूठेगी ?
जंजीर कभी तो टूटेगी।
अवरोध रूपी इस पत्थर से,
जलधार कभी तो फूटेगी।

तू किस्मत कब तक रूठेगी ?
तू किस्मत कब तक रूठेगी ?

मेहनत भी करूं, प्रयत्न करूं।
दिन रात भी मैं नित जतन करूं।
एक आस भी है और प्यास भी है।
और मन में अडिग विश्वास भी है।
अब लक्ष्य प्राप्ति से पहले तो
यह सांस नहीं अब छूटेगी।

तू किस्मत कब तक रूठेगी ?
तू किस्मत कब तक रूठेगी ?

चाहे गिरा तू मुझको धरती पर।
पर खड़ा तू तत्क्षण पाएगी।
जब तक ना साधूंगा तुझको।
यह जान नहीं अब जायेगी।

तू देख सही क्या होता है।
मैं उनमें नहीं जो रोता है।
मेहनत ही सदा हल अपना रहा।
और लक्षित पथ को जोता है।

जब विश्वास नहीं तू डिगा सकी।
अब और बता क्या लूटेगी ?

तू किस्मत कब तक रूठेगी ?
तू किस्मत कब तक रूठेगी ?

अरे हंसती है ना तू मुझ पर
कि इस बालक को आराम नहीं।
डर जाए जो इन हल्के झटकों से।
“बृजमोहन” उसका नाम नहीं।
सिंहनाद है ये इस मोहन का।
नहीं बात किसी भी झूठे की।

तू किस्मत कब तक रूठेगी ?
तू किस्मत कब तक रूठेगी ?

बृजमोहन सिंह रावत
स्नातकोत्तर शिक्षक (रसायन विज्ञान)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय दप्पर

65

यादों के दरीचे से

यादों के दरीचे से
कुछ पुष्प चुरा लाया हूँ।

बीते हुए लम्हों से
कुछ यादें चुरा लाया हूँ।

आम के बाग़ के झूले
वो बेरियों के झुरमुट

बचपन की यादों की महक
माँ का स्नेह चुरा लाया हूँ।

बहन की विदाई के वो क्षण
पिता की फौलादी बाहें
भाई -बहन का रूठना
और मनाना, साथ लाया हूँ।

वो चींटी-धप का खेल
कंचे-बंटों का सफ़र साथ लाया हूँ।
खिले हुए रिश्तों की महक
स्नेह का समंदर चुरा लाया हूँ।

वो लुका- छुपी के खेल
संस्कारों का समंदर बटोर लाया हूँ।
माँ की लोरियों का रस
पिता का आशीर्वाद अपार लाया हूँ।

अनिल कुमार गुप्ता
पुस्तकालयाध्यक्ष
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय दप्पर

66

संकल्प प्रेरणा

अच्छे विद्यार्थी कभी थकते नहीं
सच्चे साधक कभी रुकते नहीं
परिवर्तन के योद्धा यूं विह्वलते नहीं
बड़ी शख्सियत वाले छोटा परिचय देते नहीं

नहीं तो

पहाड़ों को चीर कर राह बनाना
इतना आसान नहीं होता।
सुन्दर इतिहास बनाने वालों का
इतना सम्मान नहीं होता।

अर्जुन कहाँ युद्ध अकेला लड़ा था।
निर्णायक तो उसके पीछे ही खड़ा था।

वो अब भी तुम्हें यह कह रहा है।
घनघोर निशा का अर्थ समझो
अब शीघ्र ही सवेरा हो रहा है।

बस अविलंब अपना रथ संवार लो
हृषीकेश निमित गुडाकेश से हो तुम
तामस शत्रु का संहार करके
अपना गांडीव निखार लो

अश्वमेध परचमधारी कंही थमते नहीं
अच्छे विद्यार्थी कभी थकते नहीं
सच्चे साधक कभी रुकते नहीं।

प्रदीप मनचंदिया
स्नातकोतर शिक्षक (संगणक विज्ञान)
केन्द्रीय विद्यालय भारतीय नौसेना पोत वालसुरा

67

एआई 171

एक उम्मीद ने भरी थी उड़ान ऐसी एक दिन,
उगते सूरज की सबको, थामनी थी कमान एक दिन।
कोई था कामकाजी, तो कोई यूँ ही था निकला,
प्रियजन मिलन को कोई, लिए सुनहरा सपना।
क्या खूब थी तैयारी, भर कर हृदय में सबकुछ,
उड़ चला था मन का पंछी, बाकी नहीं था अब कुछ।
हँसते उजास चेहरे, थे वृद्ध, जवान और बच्चे,
लन्दन की ओर बढ़ते, सपने हुए थे सच्चे।
शायद न जानते थे, क्या होना था आज के दिन,
नियति की क्रूरता का, आभास न था उस दिन।
लाखों प्रयास मिट्टी, हर दुआ हुई थी असफल,
भरते उड़ान गिरना, अब लपटें थी बस भूतल पर।
कितने सुहाग उजड़े, घर उजड़ गए सारे,
था दोष न किसी का, बेमौत गए सारे।
आँखें मिलन को बेकल, तरसती ही रह गईं सारी,
एक क्षण में सब-कुछ स्वाहा, जिंदगी मौत से हारी।
एक मिनट में उन सभी पर, क्या कुछ नहीं था बीता,
कि काश! वक्त रहते, कोई रोक लेता उनको।
आँखों में सपने लेकर, कह गए अलविदा सभी को
न आए फिर कभी भी, आया था ऐसा जो इक दिन।

तारा मिश्रा
स्नातकोत्तर शिक्षिका (हिन्दी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय वायुसेना स्थल, ठाणे

68

लगाएँ एक पेड़ !

आइए, लगाएँ एक पेड़ !
जिस पर बना सके एक निराश्रित चिड़िया,
अपना एक छोटा सा घोंसला...
और उस घोंसलें में पल सकें चिड़िया के छोटे बच्चे।
जिनका मंद-मधुर कलरव भर देगा,
इस अविश्वास भरे माहौल में विश्वास का संगीत
और उनका डालों पर फुदकना,
इस विषम समय में भी गाएगा आशा के गीत।
बच्चे, जो भविष्य में छुएगें, यह अनंत विस्तृत आसमान
और उनकी उड़ान छेड़ेगी, मन में उत्साह की नई तान।
बच्चे होंगे बड़े और करेंगे पीढ़ियों का एक नया सर्जन
और इस तरह चलता रहेगा सृष्टि का पुनः पुनः प्रवर्तन।
इस तरह पेड़ लगाना एक नए संसार की सर्जना है
दूर इससे होती मानव मन की वर्जना है।
तो आइए करें प्रारंभ एक नूतन सृष्टि का
इस निदाध तप्त धरित्री पर शीतल वृष्टि का।
और लगाएँ एक पेड़ !
जिस पर बना सके एक निराश्रित चिड़िया,
अपना एक छोटा सा घोंसला...

अभिषेक कुमार जैन
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र. 3 पुणे

69

प्यारी गौरैया

नन्ही प्यारी-सी गौरैया
फुदक फुदक कर
घर-आँगन में आ जाती है
"चीं-चीं" करती हुई
अपना सब हाल बता जाती है
अब इसकी इस चहचहाहट में
इसकी व्यथा झलकती है
प्रश्न पूछती है वह हम सबसे
क्यों मेरा अस्तित्व मिटा रहे हो ?

जिस तरु की टहनी पर
मेरा घर संसार बसा है
उसे उजाड़ना चाह रहे हो
बहुत कुछ छीन लिया है मेरा
अब तो मुझ पर दया करो
स्वार्थी दुनिया से बाहर आओ
मुझसे भी कुछ बात करो

मानव हो मानव ही रहना
क्यों मशीन तुम बनते हो ?
खग और तरु से प्यार करो
तुम्हें हरियाली की सौगात मिलेगी
निर्मल मन का वरदान मिलेगा
हमें तुम्हारा प्यार मिलेगा
सदा तुम्हारा घर आँगन
मेरी "चीं-चीं" से भरा रहेगा।

कविता श्रीवास्तव
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय तलेगांव, पुणे

70

आने वाले कल को हम क्या सौंप कर जाएंगे ?

दादी-नानी की कहानियों से बचपन में सीखे थे जिंदगी के पाठ कई।
बुआ के हाथों में छुपे थे कारीगरी के ठाठ कई।
मामी का बुना स्वेटर, न्यारा ही चमकता था,
जोगी बाबा के घर रोज चरखा चलता था।
मशीनों से भाव शून्य हम; क्या इन किस्सों को दोहरा पाएंगे ?
आने वाले कल को हम क्या सौंप कर जाएंगे ?

मुझे सुबह सूरज को जल चढ़ाना होता था,
छोटे भाई को संध्या का दीया जलाना होता था।
अब्दुल भी जुम्मे को नमाज अदा कर आता था।
मंदिर में हारमोनियम गफ्फार बजाता था।
सहिष्णुता के इन बीजों को, क्या हम अब पनपा पाएंगे ?
आने वाले कल को हम क्या सौंप कर जाएंगे ?

मनिहार लाख की चूड़ियों का सौदा लेकर आता था।
सुथार शादी में पूजा की चौकी देकर जाता था।
खेतों में जाने से पहले हल की पूजा की जाती थी।
चाची-ताई मिलकर गीत मंगल वह गाती थी।
कोरियाई संगीत के शौकीन युवा, क्या इन गीतों को गुनगुना पाएंगे ?
आने वाले कल को हम क्या सौंप कर जाएंगे ?

प्रयास करें कि रोबोटिक्स के साथ नैतिकता का जिक्र भी हो।
तकनीक की चर्चा में, इंसानियत की फिक्र भी हो।
'ए आई' की बुद्धिमानी में तजुर्बों का ज्ञान मिलाया जाए।
विकास के साथ प्रकृति को भी अपनाया जाए।
दुनिया के साथ चलें हम, पर अपने वतन का ध्यान रहे,
भाषा में मर्यादा हो, निज पर स्वाभिमान रहे।
जड़ों से जुड़े रहेंगे हम, आसमान तक लहराएंगे,
हम भारत का आज हैं, बेहतर कल सौंप कर जाएंगे ।।

ऋचा शर्मा
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय भा. नौ. पो. माण्डवी, गोवा

71

उस पार

थामे नहीं थम रही, जिन्दगी की रफ्तार
जाना है हर किसी को, कहीं उस पार।
यह 'उस' बड़ी ही अनोखी कल्पना है,
न पहुंच पाना 'उस पार', एक विंडबना है।
किसी की गति को थाम रहे हैं प्राण,
किसी की कल्पनाओं में ही नहीं है उड़ान।
कोई उड़ना तो चाहता है,
पर रास्तों की जटिलता से घबरा रहा है।
कोई जमीं पर नहीं है,
तो कोई चल ही नहीं पा रहा है।
कोई इतनी गति से चला, कि कहीं खो गया,
किसी पर बंधन हावी हुए,
वो महज जी भर रो गया।
ना जाने कि 'उस पार' क्या है ?
अंधेरों में कहीं हर किसी का, अपना ही ‘दीया’ है।

विक्रान्त शर्मा
प्राथमिक शिक्षक
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यायलय भा.नौ.पो. माण्डवी, गोवा

72

सम्मति

समय
प्रतिपल का उपयोग करोगे
खिल जाएगा जीवन फूल।
बिन परिश्रम के रहोगे पीछे
हाथ लगेगी केवल धूल ॥

परिश्रम
सूर्य-सा चमकना है यदि तुम्हें
तो तपना पड़ेगा अविराम।
तप-तप के चमके सभी
कर गए दुनिया में नाम ॥

कर्म
यदि बोओगे बबूल को
तो उगेंगे बबूल ही।
खाने को आम आपको
मिलेंगे नहीं कभी ॥

परवरिश
समुचित मिलेगा पर्यावरण
फल-फूल लगेंगे बड़े-बड़े।
स्वादिष्ट भी होंगे अवश्य
नहीं होंगे वे सड़े-गले ॥

व्यवहार
राग-द्वेष से दूर रहोगे
निर्मल मन हो जाएगा।
तन-मन लेकर साथ चलोगे
सच्चा सुख भी मिल जाएगा ॥

अश्वनी कुमार
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2
वास्को द गामा, गोवा

73

चिड़िया के बच्चे

वह मधुर चहचहाहट
एसी के कंप्रेसर के
पीछे से आ रही थी
लगा
अंडों से चूज़े
बाहर आ गए हैं

भूख से कराहते
मां को पुकारते
बच्चों का कराहना !
कहां थमती मां
उड़ चली गई
लेने नन्हा दाना
चुन-चुन कर
लाए दानों को
अपनी चोंच से
उस नन्ही चोंच में रख
मां का प्यार से खिलाना।

ममता की इस लीला को
मैं धीरे धीरे निहारती
उनके सुख में खुश होकर
मैं आनंद से भर जाती।

बीत गए दिन लगा मुझे
अब चिड़िया के वह बच्चे
जल्दी बड़े हो जाएंगे,
बुलंद हौसलों से
अपने पंख फैला
ऊंची उड़ान से
आकाश को छू पाएंगे।
आज़ादी का जीवन पा
जब मर्ज़ी उड़ जाएंगे॥

मृदुला नागदा
प्राथमिक शिक्षक (संगीत)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2 वास्को द गामा, गोवा

74

कौन है वह

रास्ते में चलते हुए आया एक ख्याल,
कौन है वह जिसके लिए मैं हूं बहुत बेहाल
पीछे मुड़कर देखा तो था कुछ वहीं
शायद एक एहसास जो हुआ कभी नहीं।

शायद एक सपना था अधूरा सा, अंजाना सा,
ना जाने वह क्या था कोई अपना सा या बेगाना सा
नदी की धारा की तरह नहीं था वह स्थिर
आगे ही आगे बढ़ता जा रहा था ना जाने वह किधर।

तभी चलते-चलते दो अनजाने रास्ते मिले,
समझ नहीं आ रहा यह कैसे हैं फासले,
हाथ थाम किसी ने कहा चलो मेरे साथ मैं ले चलूं तुम्हें वहां
जहां हो खुशी उमंग और तुम्हारे कदमों में ये सारा जहां।

अंदर से आवाज आई क्या करूं और क्या ना करूं
दोस्त है सच्चा सा क्या इसके साथ चलूं ?
था उस पर मुझे विश्वास इसलिए चल दी उसके साथ
ना था मुझे कोई डर और ना ही कोई पछतावा।

दोस्त ने दोस्ती ऐसी निभाई,
जो कि सीधे दिल पर छाई
अंजाना सा साया घूमता है यहीं कहीं
ना जाने क्या है कभी गलत तो कभी सही।

शायद सिर्फ एक एहसास है
जो कि दिल के बहुत पास है
ना कभी देखा ना कभी सुना कौन है
वह जो मेरे लिए बहुत खास है, बहुत खास है।

दीक्षा ठाकुर
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (शारीरिक स्वास्थ्य)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2 वास्को द गामा, गोवा

75

मेरी माँ और मेरी कामयाबी

पढ़ना नहीं आता मेरी माँ को दोस्तों,
वह फिर भी मुझे जीवन जीना सिखाती है।
पढ़ना नहीं आता मेरी माँ को दोस्तों,
फिर भी वह उंगली पकड़ चलना सिखाती है।
कदम कदम पर साथ खड़ी माँ,
अपना आंचल फहराती है।
जब देखती है परेशान मुझे, अश्रु वह बहाती है।
दौड़ कर आती पास मेरे,
गले से मुझे लगाती है।
पढ़ना नहीं आता मेरी माँ को दोस्तों,
वह फिर भी जीवन जीना सिखाती है।

रोज रात को नई-नई कहानियां,
मुझे सुनाती है,
रोज स्कूल भेज कर मुझे,
मेरी यादों से दिल बहलाती है।
जब मैं आई स्कूल से लौट कर,
प्यार से गले मुझे लगाती है।
रोज बनाती स्वादिष्ट भोजन,
स्नेह से मुझे खिलाती है।
तभी तो, यह माँ की ममता कहलाती है।
पढ़ना नहीं आता मेरी मां को दोस्तों,
वह फिर भी जीवन जीना सिखाती है।

कठिन परिस्थितियों में मुझे,
मुश्किलों से लड़ना सिखाती है।
उनकी दी हुई सीख,
मुझे कामयाबी तक पहुंचाती है।
जब मैं चली कामयाबी के रास्ते,
दौड़ी पीछे चली आती है,
कंकड़, कांटों की परवाह किए बिना,
आंसू अपने छुपाती है।

जब मिल जाए सुकून उन्हें,
वह प्यार से मुस्कुराती हैं।
उनकी मुस्कुराहट मुझे जीवन जीने का,
नया रास्ता दिखाती है।
पढ़ना नहीं आता मेरी मां को दोस्तों,
वह फिर भी जीवन जीना सिखाती है।

ज्योती कुमारी
प्राथमिक शिक्षक
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2 वास्को द गामा, गोवा

76

हम बढ़ चले

बढ़ चले, हम बढ़ चले,
निरन्तर ही हम बढ़ चले

शिक्षा के निर्माण में,
छात्रों के उत्थान में,
हर स्वप्न से साक्षात्कार में,
और शिक्षक के सम्मान में,
निरन्तर ही हम बढ़ चले

असमंजस से निर्णय तक,
डर से निडरता तक,
व्यग्रता से सहजता तक,
मौन से मुस्कुराहट तक,
निरन्तर ही हम बढ़ चले

नियति के आदेशों पर,
विधि के विधान पर,
शिक्षक के आव्हान पर,
मन-मस्तिष्क के संज्ञान पर,
निरन्तर ही हम बढ़ चले

रास्तों से मंजिल की ओर,
विचारों से प्रयोजन की ओर,
ठहराव से प्रगति की ओर,
अज्ञानता से शिक्षा की ओर,
बढ़ चले, हम बढ़ चले,
निरन्तर ही हम बढ़ चले

शिखा शम्भरकर
उप-प्राचार्या
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय अजनी

77

धरा संरक्षक

इस धरा पर जीवन में खुशहाली के हैं तीन उपाय
संसाधनों के समुचित उपयोग के निज ज्ञान बढ़ाएं।

भौतिक संसाधनों का हो समझदारी से इस्तेमाल।
इस्तेमाल के बाद हो अन्य रूपों में पुनः इस्तेमाल।
अगर संभव ना हो इस वस्तु का कोई भी इस्तेमाल।
भेजें इसे कारखाने में, बन जाए कोई नया सामान।

उदाहरण विशेष से मैं यह बात पुनः दोहराता हूं।
पढ़ने का हो शौक यदि; खरीद लाएं कोई किताब,
स्वयं इसे खूब पढ़ें और दूसरे को भी खूब पढ़ाएं।
जब खुलने लगे इसकी सिलाई पन्ने अलग पाए।

इस्तेमाल करें इसे ठोंगे में; चना इसमें समाय;
आप खूब खाएं और थोड़ा मित्रों तक पहुंचाएं।
इस्तेमाल के बाद ठोंगे को एक जगह जुटाए।
कारखाने में इससे फिर नया कागज बन जाए।

कागज के कई उपयोगों से वन कटाई कम हो जाए।
वन हमारे संरक्षित हो व धरती हरी-भरी हो जाए।
दिखाकर ऐसी समझदारी धरती को स्वर्ग बनाए।
धरती रहे हरी-भरी, आप धरा संरक्षक कहलाए।

अविनाश कुमार अंजाना
पुस्तकालयाध्यक्ष
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय आरा

78

अपनों की कैद

क्यों हमें बाहरी संघर्षों से बचाया जाता है,
और रसोई के धुएँ में झुलसाया जाता है।
क्यों हमें छुई-मुई सा पाला जाता है,
और जरा सी चोट पर घर सिर पर उठाया जाता है।
हम कमजोर हैं क्यों एहसास दिलाया जाता है,
हिम्मत से नहीं, हमदर्दी से सहलाया जाता है।
क्यों हिम्मत नहीं देते जिंदगी से लड़ने की,
जिंदगी में कुछ अकेला करने की।
जन्में हैं हम भी साहस के साथ,
पर बचपन से ही उसे दबाया जाता है।
हम में भी है वो आत्मसम्मान,
पर उसे हमेशा गहरी नींद में सुलाया जाता है।
क्यों हमने औरतों के लिए ऐसा समाज बनाया है,
बाहरी अनुभवों से अछूत घरेलू हिंसा का शिकार बनाया है।
खुले आसमान से मीलों दूर,
घर की सुख-सुविधाओं में कैद बिठाया है।
जीवन है हमारा, लेकिन निर्णय का हकदार,
किसी और को बनाया है।
अपनी जरूरतों को दूसरों से माँगकर,
पूरा करना सिखाया है।
घर की जिम्मेदारी के नाम पर अपनों को जोड़ना,
और सपनों को तोड़ना सिखाया है।
क्यों हमने ऐसा प्रचलन चलाया है,
खुद के घर को ही उसकी कैद बनाया है।

पूजा पोरवाल
प्राथमिक शिक्षक
केन्द्रीय विद्यालय मोतिहारी

79

शिक्षक की अभिलाषा

शिक्षक हैं हम, हमें नया भारत बनाना है।
इन नन्हे बच्चों के सपनों को, हमें पंख लगाना है।
ये नन्हे गीली माटी से, इनका न कोई मोल अभी,
लेकिन मुझ कुम्हार की मेहनत से, बन जायेंगे ये अनमोल सभी।
इन अनमोल रत्नों को हमें सजाना है,
शिक्षक हैं हम, हमें नया भारत बनाना है।

सही गलत का न भान इन्हें, हमें सार्थक मार्ग दिखाना है।
ये है राही जीवन पथ के, हमें मार्गदर्शक बन जाना है।
ये भारत के उज्ज्वल भविष्य, विश्व में परचम इन्हें लहराना है,
और इस तरह हमें दुनिया में अपनी परछाइयाँ छोड़ जाना है।
शिक्षक हैं हम हमें नया भारत बनाना है।

बाधाएँ अनेक लेकिन, हम हार न मानेंगे।
इन प्यारी कलियों को, भारत की बगिया के फूल बनाएँगे।
सींच अपने स्नेह और त्याग से, इन्हें सशक्त बनाना है।
शिक्षक हैं हम, हमें नया भारत बनाना है।

शिक्षक, वो जो मरकर अमर हो जाता है
जैसे राधाकृष्णन और द्रोणाचार्य की गाथा है।
तो तुम भी उठो और अपना पुरुषार्थ करो।
इस जग से जाने से पहले, तुम भी एक आगाज करो।
अपनी मेहनत से इतिहास नया बनाना है।
शिक्षक हैं हम, हमें नया भारत बनाना हैं।

कुमकुम सिंह
प्राथमिक शिक्षक
केन्द्रीय विद्यालय मोतिहारी

४०

ध्रुव तारे सा चमकाएँगे

हम श्रमरत मानव, श्रम से अपना भाग्य चमकाएँगे
करोड़ों भारत वासी मिलकर, भारत नया बनाएँगे।
भूख, गरीबी लाचारी को, मिलजुल कर हम हराएँगे।
विश्व गगन में बढ़कर, इस तिरंगे को लहराएँगे।

विविध रंगों से मिलकर, सतरंगी देश सजाएँगे
अनेकता में एकता को, ताकत अपनी बनाएँगे।
संकट में आगे बढ़कर, इसकी रक्षा को आएँगे।
शत्रु की टेढ़ी चाल को, पल में नाकाम बनाएँगे।

विश्व क्षितिज में जाकर, इसका मान बढ़ाएँगे
देश की गौरव गाथा को, अंबर तक लेकर जाएँगे।
गगन केंद्र में पहुँचकर, हम नये प्रयोग करेंगे।
शुभांशु के श्रम को, हम मिलकर सलामी देंगे।

अभियान सिंदूर जारी रखकर, आतंक की कमर को तोड़ेंगे।
आतंक के आकाओं को, घर में घुसकर धोएंगे।
सुख शांति सदा बरसाकर, देश को स्वर्ग बनाएँगे।
अंतरिक्ष में भारत को, ध्रुव तारे सा चमकाएँगे।

डॉ. योगेंद्र कुमार पांडेय
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय खैरागढ़

४१

बाल अभिलाषा

भारत माँ के चरणों में,
अब अश्रु पुष्प चढाऊंगा।
बलिदानी बेटों को अपने,
खून से तिलक लगाऊंगा॥

अमर किया नाम देश का,
शहीदों ने क़ुरबानी से।
उन वीरों की गौरव गाथा,
रणवीरों को सुनाऊंगा॥

भारत में हमला था बोला,
जब पड़ोसी दुश्मन ने।
सरहद में था मोर्चा खोला,
जब पड़ोसी दुश्मन ने।

रणचंडी सी टूट पड़ी,
सेना दुश्मन की टोली पर।
किया घात पर घात, किया
संघात दुश्मन की टोली पर॥

बम गिरे शत्रु पर ऐसे,
मिला ना बचने का रास्ता।
घेर लिया था शत्रु को,
फिर वो कैसे कहां भागता॥

लाज बचायी भारत की,
आंच न उस पर आने दी।
जान गंवाई सैनिक ने पर,
आन ना अपनी जाने दी॥

ऐसे वीर शहीदों के आगे,
मैं नतमस्तक हो जाऊंगा।
उठा तिरंगा हाथों में,
वीरों के आगे-आगे जाऊंगा॥

आलोक जायसवाल
पुस्तकालयाध्यक्ष
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय गिल नगर

४२

हम ऐसे दीपक

हम ऐसे दीपक है जग में,
जग रोशन करने आए हैं।
बन्धन इतने बाधाएँ इतनी,
जिन्हें पार करने आए हैं।

दायित्व बड़ा कितना है दिया,
जिसे तूने जिया, जिसे मैंने जिया,
हर कारज पूरण कर देंगे,
दायित्व निभाने आए हैं।

कुछ तुम कर दो, कुछ हम कर दें,
आसान ये जीवन शिक्षा का।
नन्हें पौधों से शाखाएँ निकलें,
ये बाग सजाने आए हैं।

शिक्षा है तन, शिक्षा है मन,
शिक्षा ही हमारा जीवन है।
शिक्षा से बढ़कर कुछ भी नहीं,
ये जहाँ को बताने आए हैं।
हम ऐसे दीपक...

सरिता सोनी
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (कला)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय डुंगरपुर

४३

पुस्तकें हमेशा तुम्हें बुलाती हैं

पुस्तकें हमेशा कुछ बोलती हैं,
अगर तुम चाहो तो जीवन के रहस्यों को खोलती हैं
अपने पन्नों पर दिलकश नज़ारों को छुपाती हैं
पुस्तकें हमेशा तुम्हें बुलाती हैं।

पुस्तकें अपनी बाहों में इतिहास को छुपाती हैं
पन्नों को एक बार पलटो तो सही
यह तुम्हारे स्वर्णिम इतिहास को दिखाती हैं
पुस्तकें हमेशा तुम्हें बुलाती हैं।

यह तुम्हारे प्रियसी की आभा भी दिखाती हैं
तुम भले ही दूर चले जाओ
फिर भी नि:स्वार्थ अपने पास बुलाती हैं
पुस्तकें हमेशा तुम्हें बुलाती हैं।

पुस्तकें ज्ञान की गंगा भी बहाती हैं
एक बार डुबकी लगाओ तो सही
यह वैतरणी भी पार कराती हैं
पुस्तकें हमेशा तुम्हें बुलाती हैं।

एक बार अपनाकर तो देखो
यह तुम्हें अपनों सी सुहाती है
पुस्तकें हमेशा तुम्हें बुलाती हैं।

सुधीर कुमार
पुस्तकालयाध्यक्ष
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय खानापारा

84

रिक्त स्थान

हर जगह एक रिक्त स्थान है उसका
सुता भार्या भगिनी माता
जोड़ती है सबसे नाता
सम्बन्ध कभी नहीं पूरता उसे
वह पूरती है सब सम्बन्धों को
सामाजिक अनुबंधों को
उसकी जगह है
जीवन के हर मोड़ पर
शहर गांव के हर नुक्कड़ पर
उसे तकती हैं आँखें
वह अपने मन उड़ती है
फ़ैला पाँखें
स्थान हो कहीं
सर्वस्व
एक भय ही व्याप्त है
उसने कहा-होने दो
मुझे यह रिक्त स्थान ही पर्याप्त है।

डॉ. सुशील कुमार
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2 जालंधर छावनी

४५

बिटिया

मेरी छोटी-सी बिटिया खुशी
भोली है, चंचल है
वाचाल और नटखट भी थोड़ी-सी
कुछ-कुछ कविवर त्रिलोचन की चम्पा जैसी
अक्सर मुझसे चुहल करती है
लड़ती है झगड़ती है
रूठती है फिर मान जाती है
जिद कर मेरे संग खेलने लगती है
वह छिपती रही
मैं खोजता रहा
वह भगाती रही
मैं भागता रहा,
आखिरकार हारकर थक गया
फिर अपने काम में रम गया
अचानक वह पर्दे के पीछे से प्रकट हुई
मुझे डराकर मेरे गले से झूम गई
मैने पुचकारा
पूछा बेटी तुम कहां गई थीं
मैं तो हार गया
वह खिलखिलाकर हँसी
अपनी विजय पर इतराती
मेरी भूल सुधारती-सी
चहकी
बाबा तुम मेरे पीछे भागते क्यों हों
आप अपना काम करो
खुशी अपने आप आ जाएगी
यह कहकर वह फुर्र हो गई
मेरे अंतस में कुछ डोल गया
लगा उसके नन्हे मुख से
जीवन बोल गया।

उग्र मोहन यादव
उप-प्राचार्य
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2 जालंधर छावनी

८६

गुरुजन को प्रणाम

अंधकार नाश किया,
ज्ञान का प्रकाश किया,
उन सभी गुरुओं को,
शिष्या का प्रणाम है।

शब्द व्यवहार दिया,
छंद उपहार दिया,
उन्ही गुरु चरणों में,
मेरे पुण्य धाम हैं।

शंका समाधान दिया,
कविता विधान दिया,
छाया उन गुरुओं की,
रही आठों याम है।

जीने का सलीका दिया,
कहने का तरीका दिया,
उनकी कोशिशों से,
आज मेरी पहचान है।

विपत्ती का सामना सिखाया,
हर पद पर रास्ता दिखाया,
सूर्य जैसे मेरे गुरुओं से,
इल्म की रोशनी की शान है।

शब्द कोष दान दिया,
भाव परिधान दिया,
माँ शारदा साधना से,
आज मेरा नाम है।

चीनू माथुर
प्राथमिक शिक्षक
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रं.1 गोलकोंडा

87

स्नेह की धारा

स्नेह की धारा, दिल को छूती हैं
अपनों की याद, आँसू बहाती हैं
माँ की याद में, आँसू बहते हैं
बार-बार याद आती है, दिल को सताती है।

नौकरी की खातिर, घर से दूर रहना
अपनों की तड़प, महसूस होती है
दिल की गहराई में, उनकी यादें बसती हैं
हर पल उनकी याद, दिल को छूती है।

पापा का प्यार, बचपन की यादें ताज़ा हैं
भाई का मजाक, हँसी की बौछार याद है
भाभी का ख्याल रखना, स्नेह की धारा है
भतीजे के साथ खेलना, दिल की खुशी की बहार हैं।

रात के अंधेरे में, दिल की बातें होती हैं
माँ की आवाज, कानों में गूंजती है
दूरियों के बावजूद, प्यार बना रहता है
अपनों की याद, दिल को छूती जाती है।

कभी-कभी लगता हैं, सब कुछ खो दिया
लेकिन माँ की याद, दिल को संभालती है
पापा की सीख, जीवन का मार्गदर्शन है
भाई का साथ, जीवन की राह में सहयोग है।

भतीजे की मुस्कान, दिल को खुशी देती है
भाभी का प्यार, परिवार की एकता को दर्शाता है
घर से दूर, लेकिन दिल नहीं भटका है
अपनों की याद, हमेशा साथ रहती है।

कनुप्रिया वार्ष्णेय
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र.1 गोलकोंडा

४४

यादों का कारवां

यादों के पल ज़िंदगी की राह में साथ चलते हैं,
वक़्त के सफ़र में लम्हें कुछ ऐसे आते हैं,
जो बीतकर भी दिल में घर बना जाते हैं।

बहुत लोग जी लेते हैं इन यादों के सहारे,
यादों के सफ़र में फिरते हैं मारे-मारे।
इनकी परछाई से कहीं दूर नहीं भागते,
इन्हीं पलों को संजोकर रखते हैं उम्र भर सारे।

कुछ लोगों के लिए यादें नदी का किनारा हैं,
उसी कश्ती के सहारे मंज़िल तक पहुँचने का ज़रिया हैं।
कभी-कभी लोग यादों में डूबकर खुद को खो देते हैं,
और कुछ लोग तो डूबने में ही आनंद पाते हैं।

कुछ यादों को संबल बनाकर ज़िंदगी जी लेते हैं,
हर बाधा को चुटकी में सह लेते हैं।

यादों का क़ाफ़िला ज़रूरी है जीने के लिए,
अकेलेपन में होंठों पर मुस्कान लाने के लिए।
यादें कड़ी धूप में ठंडी छाँव के समान हैं,
व्याकुल मन के लिए शीतल जल के समान हैं।

बिन यादों के, जाने लोग कैसे ज़िंदगी जी लेते हैं,
ज़िंदगी को बोझ मानकर कड़वा घूँट भी पी लेते हैं।

यूँ तो सभी चाहते हैं थोड़ी-बहुत यादों को पालना,
पर सभी को नहीं आता मीठी यादों को सँभालना।
कभी-कभी धूल भरी यादों के पन्नों को चाहिए खोलना ,
वरना वक़्त की मार से उनका वजूद तय है खोना।

सोनाली मैत्रा
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र.1 गोलकोंडा

४१

आँखों में चमक

कई दरवाजे खटका-खटका कर के,
थके हारे नन्हे हाथ,
बेबस होकर मोहन खड़ा, पिता के साथ,
पसीना पोछता और बताता,
अपनी दुःख की गाथा,
कहीं नहीं हुआ, नहीं कहीं हुआ,
दाखिला इसका !

आंखे नीचे झुके हुए, हाथ जोड़कर बोला,
बेटे को नब्बे प्रतिशत हो, तभी तो मिलेगा दाखिला !
तो किसी ने बोला, अस्सी प्रतिशत हो तो ही आना
वरना कहीं और चले जाना !

आँखों में इसके चमक है,
पर विद्या के हर चौखट पर
लोगों ने उसमें अँधेरा पाया,
के.वि. में इसको ज़रूर मिलेगा ,
लोगों ने हमें बताया !

पंख फैलाकर उड़ने का एक मौका
इसको ज़रूर मिलेगा,
मेरे बच्चे को राह दिखाने,
सर्वश्रेष्ठ गुरु और साथी जरूर मिलेंगे,
अपना लो, इसको भी आप
ये नाम अवश्य करेगा रोशन
नाम है इसका गणपत मोहन !

पी. डी. डेल्ली जेम्स
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (गणित)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय तिरुमलगिरि

९०

पदत्राण

देख कंगूरा इमारत का हर कोई यही सोचता है,
कितनी क़िस्मत वाला है, हर पल सदा चमकता है।
संघर्षों की बदौलत ही जीवन में सफलता मिलती है,
हर उपलब्धि के पीछे बस त्याग-कथा ही चलती है।
अंबर से लेकर धरती तक, जब सृष्टि का आविर्भाव हुआ,
सुन्दरतम और विवेकी मानव का धरती पर पूर्ण प्रभाव हुआ।
चर-अचर जो भी जीव यहाँ, विवेकी केवल मानव था,
पर वह भी स्वार्थी बन बैठा, ऐसा तो केवल दानव था।
उसकी करतूत देख यहाँ, जब परिवेश हर तरफ खौल उठा,
तब उसको राह दिखाने को, जूता उसका उससे बोल उठा।
जीवन में मुसीबत न आए, सदा प्रयास मैं करता हूँ,
लिए समर्पण भाव सदा, मैं कदम-कदम पर चलता हूँ।
किसकी शख्सियत कैसी है, सदा मैं ही बतलाता हूँ,
दबा रहता हूँ सबसे नीचे, पर खुशियाँ सबको पहुँचाता हूँ।
जब भी कभी मैं टूटा हूँ, प्रेम-तगा ही माँगा हूँ,
प्रेम दिया मुझको जिसने, उसका लक्ष्य मैं साधा हूँ।
तन मैला जो हुआ कभी, कालिख से खुश हो जाता हूँ,
सुख-प्रकाश फैला करके, गम-अंधकार पी जाता हूँ।
तन हो जाए तार-तार, फिर भी न हिम्मत हारा हूँ,
तल्ले-तल्ले पर जोड़-जोड़, करता सदा गुजारा हूँ।
जिसने मेरी कद्र की, सदा मुझको अपनाया है,
मैंने भी उसकी सेवा में, तन-मन खूब लुटाया है।
बड़े-बड़े जो लोग यहाँ जिनके कल-कारखाने हैं,
सच पूछो तो मेरी बदौलत ही, भरते अपने ख़जाने हैं।
छोटा-बड़ा न कोई जग में, सब झूठी धौंस दिखाते हैं,

राजा हो या रंक सभी, एक ही मार्ग सब जाते हैं।
जीवन का है सार यही, जो कोई समझ न पाता है,
त्राण-तल जिसने शुद्ध रखा, वह भव-सागर तर जाता है।
त्राण-तल का जिसने प्रतिकार किया, जीवन-समर वह हारा है,
अमीर-गरीब की न चाह मुझे, मुझको तो प्रेमी प्यारा है।
जाति-पाति का भेद नहीं, मैं सबका पग सहलाता हूँ,
समस्या-कंटक से सबको कदम-कदम पर बचाता हूँ।
जो मुझको अपनाता है, सीने पर उसे बिठाता हूँ,
उसके पथ के काँटे चुन, सर्वदा साथ निभाता हूँ।
वे मुझ में कील ठोकते हैं, मैं उनको लक्ष्य दिखाता हूँ,
उनकी मुश्किल आसान बना, उनको सुख पहुँचाता हूँ।
सर्वदा सबका पदत्राण बनूँ, जीवन-सुखद प्रमाण बनूँ,
सबकी पीड़ा संहार करूँ, हर पल सबका कल्याण करूँ।
सभी इक दूजे के सहायक हों, ये मेरे दिल की आशा है,
निसि-वासर सब खुशहाल रहें, ऐसी मेरी अभिलाषा है।

डॉ. उमाशंकर पाण्डेय
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2 एफ.सी.आई. गोरखपुर

९१

ममता की छाँव

ममता की छाँव, वो अमृत धारा, जीवन की हर धूप में सहारा।
कोमल हाथों का वो प्यारा स्पर्श, हर दुख को हर ले, जैसे हर्ष।
माँ की आँखों में वो अनमोल प्यार, जिससे मिलता जीवन को आकार।
लोरी में उसकी, जादू की धुन, नींद सुलाए, मिटा दे हर गुन।
छोटे क़दमों को चलना सिखाया, हर गिरते को फिर से उठाया।
खाना खिलाया, लोरी सुनाई, जीवन की राहों पर ज्योति जलाई।
त्याग की मूरत, तपस्या महान, माँ के चरणों में स्वर्ग समान।
हर पल वो करती बस परवाह, अपनी खुशी से भी उसकी है चाह।
जब भी भटके, वो राह दिखाए, सही-गलत का अंतर समझाए।
दुनिया में कोई दूजा न ऐसा, माँ का प्यार, निर्मल गंगा जैसा।
आँचल में उसके, मिलती पनाह, हर मुश्किल से लड़ने की राह।
ईश्वर का रूप, साक्षात् वो माँ, ममता की छाँव, सदा रहे यहाँ।

कृष्णानन्द कुशवाहा
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2 एफ.सी.आई गोरखपुर

92

हाँ मैं शिक्षक हूँ

मनुज हूँ, नहीं कोई अवतार हूँ
भारत के लोगों में बन्धुत्व का विस्तार हूँ
राष्ट्र के निर्माण में आधार का संरक्षक हूँ
हाँ मैं शिक्षक हूँ...
कल की आवाज़
और आज का विचार हूँ
आशाओं का आगार
नित ऊर्जा का संचार हूँ
सभ्यता से संस्कृति के
सम्बन्ध का समीक्षक हूँ
हाँ मैं शिक्षक हूँ...
नवयुग के सृजन में
भविष्य का आकार हूँ
जीवन मग के अंधियारे में
उम्मीद का उजियार हूँ
व्यक्तित्व के विकास में
गरिमा का परिरक्षक हूँ
हाँ मैं शिक्षक हूँ...
चरित्र के निर्माण में
चलचित्र का निदेशक हूँ
प्रेरणा का स्वर स्वयं
नवसृजन का प्रवर्तक हूँ
अनुचित और उचित के
मध्य का निरीक्षक हूँ
हाँ मैं शिक्षक हूँ...
असत् से सत् की ओर
तमस् से ज्योतिपथ
अज्ञानता से ज्ञान के मार्ग का
प्रदर्शक हूँ
अप्राप्य से प्राप्य तक
असत्य और सत्य के
मध्य का परीक्षक हूँ
हाँ मैं शिक्षक हूँ...

संजीव कुमार मिश्र
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (संस्कृत)
केन्द्रीय विद्यालय क्र.2 एफ.सी.आई. गोरखपुर

१३

मिट्टी की तह में

मिट्टी की तह में
दबाया गया बीज होता है अंकुरित
वृक्ष बनने के लिए
तोड़ देता है आवरण,
कराता है एहसास अपने शक्तिपुंज होने का
फूस के नीचे दबाई गई आग
होती है प्रज्ज्वलित द्विगुणित वेग से
बीज और आग दबाए नहीं जा सकते
मिट्टी की तह और फूस से
आवाज आवाम की नहीं हो सकती है शांत
बंदूक की नोक से
बंदूकों का खौफ और भी उकसाता है अवाम को
प्रचंड होने के लिए
माना कि दीमक बहुत हैं जो काट देते हैं अंकुर
वृक्ष बनने के पूर्व ही
किंतु यह नहीं है पराजय उस शक्तिपुंज बीज का
जो चाहता था बनना वृक्ष
होने पर भी नष्ट अंकुर कराता है एहसास
अपने पूर्व इतिहास का
थी शक्ति जिसमें अद्भुत संघर्ष और चिर जिजीविषा की
प्रेरणा स्रोत है वह होने के लिए कटिबद्ध
दुर्दमनीय प्रतिरोध के।

रामविलास द्विवेदी
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय इफ्फको फूलपुर प्रयागराज

९५

बेटीः एक खज़ाना

सबसे करबद्ध निवेदन है, हम सब ये प्रण लेकर जाएँगे।
जितना बेटों को चाहते हैं, उतना ही बेटियों को चाहेंगे ।।
आचरण रहे दुर्भावहीन तो, मोक्ष द्वार खुल जाएँगे,
जितने भी पाप किए होंगे, बिन गया गए धुल जाएँगे।
दुःख के बादल छँट जाएँगे, बेटी की एक किलकारी में।
ये जूही चमेली, चम्पा सी, महकें घर की फुलवारी में।
आओ मिलकर संकल्प करें, फुलवा में ही फूल लगाएँगे ।।
जितना बेटों को चाहते हैं, उतना ही बेटियों को चाहेंगे ।।
बेटी तो एक खज़ाना है, जैसे शेष शिरोमणि हों,
ऐसा रक्षा कवच प्रदान करो, जैसे मानो खड़े स्वयं फणि हों।
जिस तरह शेष मणि रक्षा को, अपना निज धर्म समझता है।
उस तरह हमें भी दुहिता को, अपना सर्वस्व समझना है।
निज आन, मान, मर्यादा को, हर मुश्किल से लड़ जाएँगे ।।
जितना बेटों को चाहते हैं, उतना ही बेटियों को चाहेंगे ।।
गार्गी, मैत्रेयी, अनुसूया, सावित्री, सती और सीता सी,
कुछ पाठ पढ़ती ब्रह्मज्ञान, कुछ ज्ञान बाँटती गीता सी।
ऐसे ना जाने कितने ही, भूतल पर अनगिनत उदाहरण हैं।
इनके करतब और कीर्तिमान, बेशक ही नहीं साधारण हैं।
जिनके घर नहीं बेटियां हों, उनसे पूछो इस पीड़ा को।
इसलिए बन्धुओ मैं कहता, हम अभी उठाएँ इस बीड़ा को।
इस भेदभाव की बेड़ी को, हम आज भेदकर जाएँगे ।।
जितना बेटों को चाहते हैं, उतना ही बेटियों को चाहेंगे ।।

अवकेश कुमार
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (संस्कृत)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र.1 ए आयुध निर्माणी, तिरुचिरापल्ली

९८

कलम का आह्वान

लहू बन स्याही जब कलम से मिलती है,
मूक पृष्ठों को भी ये जीवंत सा करती है।
है कौन अछूता जिसे कलम ने न छुआ,
क्रांति का बिगुल बजा, जहां-जहां लिखा ॥

इसकी अकाट धार से फिरंगी थरथराए थे,
क्रांति के नायकों ने लेखनी से देशभक्त जगाए थे।
तोड़ी कुरीतियों की बेड़ियां, अपने उनमुक्त विचारों से,
मुक्त किया समाज सती प्रथा, और छुआछूत जैसे आचारों से ॥

इसी कलम ने रचा हमारा संविधान महान,
देश निर्माण को किए नव पंख प्रदान।
वेदना या हर्ष सब कुछ, भावों में संजोती है,
सुख-दुख में हमारे साथ-साथ हंसती और रोती है ॥
उठो बालक, तुम अब कलम का आह्वान करो,
ज्ञान के दीपक से जग में जय-गान करो।
बदल दो अपना भाग्य अपनी लेखनी से,
मातृभूमि को विश्वगुरु बनाने का लक्ष्य संधान करो ॥

पंकज रस्तोगी
स्नातकोत्तर शिक्षक (भौतिक विज्ञान)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय वायुसेना स्थल, बरेली

९६

हौसलों की उड़ान

गर कुछ करने की हिम्म्त है तो,
हौसलों में उड़ान रख।
कर अपने पंखो को बुलन्द,
आसमनों में अपनी पहचान रख।

राह कब किसी की आसान रही है,
पर मंजिल उसी को मिली है
जिनके हौसलों में जान रही है।
उन हौसलों पर अपने तू एतबार रख,
आसमानों में अपनी पहचान रख।

याद रख तू आम नहीं,
तू तो है एक खास शख़्स।
जो बाधाओं से टकरा भी,
नहीं हुआ है कभी धवस्त।
उन बाधाओं के सामने,
अपने हौसलों की उड़ान रख,
आसमानों में इक बार फिर से अपनी पहचान रख।

सम्पदा
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिंदी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय अंबिकापुर

९७

शिक्षक

शिक्षक वही जो मार्ग को, कर दे प्रशस्त दे रौशनी
भर दे उमंग का रंग मन में, जिसमें ढले यह जीवनी।
बहे फिर यह धार बनकर, और फैले हर घड़ी
जिसको भी छू-ले राग भर दे, बिलकुल हो जैसे मोहिनी ॥

हाँ रंग वो जो कल का भावी, देश का रंग रूप हो
जिसमें हो बसती इस धरा की, माटी-सी मधु गंध हो।
वृक्ष पीपल का हो जैसे, देता महती छाया को
शिक्षक वही उस तरु-सा देता, नित्य अपनी छाया को ॥

बगिया हो जैसे किसी कृषक की, जिसको सहेजे वो रात-दिन
फिर जो मिले सब कुछ समर्पित, कर देते हैं वह सोचे बिन।
हो नदियां जैसे जल-तरंगित, दे देती सुधा वह सोचे बिन
देना ही तो है प्रकृति यह, जिसको सिखाते शिक्षक प्रतिदिन ॥

बचपन घुला हो, खुशियाँ मिली हो, और संग हो प्रेमधन
फिर चाह किसकी और जग में, है भला आश्वस्त मन।
मन में हैं खुशियाँ साथ जिनके, है खड़ा यह बालपन
शिक्षक को लगता है सदा फिर, कार्य उसका सरलतम ॥

राकेश कुमार झा
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (संस्कृत)
केन्द्रीय विद्यालय पू.सी.रे. मालीगांव

९४

व्यथा और आशा

पता है मैं कौन हूँ, पता है मैं कौन हूँ
मैं वो हूँ जो सबसे अलग दिखता हूँ
मैं वो हूँ जो उम्मीदों के धागे से अपने सपने बुनता हूँ
मैं वो हूँ जो हंसने का कारण बनता हूँ, लेकिन फिर भी कम हँसता हूँ
मैं वो हूँ जो सबके साथ रहता हूँ लेकिन फिर भी अकेला हो जाता हूँ
जी हां मैं वही हूँ जो क्लास में सबसे पीछे बैठता हूँ

सुनता हूँ सभी बातों को लेकिन अमल नहीं कर पाता हूँ
करता हूँ सब कोशिशें लेकिन प्रबल नहीं बन पाता हूँ
मैं भी कुछ बनना चाहता हूँ लेकिन समझ नहीं पाता हूँ
इन अनगिनत रास्तों पर सही रास्ता खोज नहीं पाता हूँ
हजारों सपने होने पर भी अन्धकार में खो जाता हूँ
जी हां मैं वही हूँ जो क्लास में सबसे पीछे बैठता हूँ

मुझे भी चाहत है खुले आसमान में उड़ान भरने की
मुझे भी चाहत है सबके समान एक साथ आगे बढ़ने की
लेकिन अपनी मज़बूरी ओर व्यथा से उबर नहीं पाता हूँ
भटकते रास्तों पर घूमकर वापस आ जाता हूँ
मैं वो हूँ जो खिड़की से बाहर अपनी दुनिया खोजता हूँ
जी हां मैं वही हूँ जो क्लास में सबसे पीछे बैठता हूँ

मुझे लगता है कि एक दिन मैं भी कुछ कर दिखाऊंगा
मुझे लगता है कि एक दिन मैं भी कक्षा में आगे बैठाया जाऊंगा
मुझे लगता है कि एक दिन मुझे भी कहा जाएगा
उठ, आगे बढ़- तुम कुछ भी कर सकते हो !
इसलिए उम्मीद ना छोड़कर मैं भी हर रोज स्कूल आता हूँ
मैं वही हूँ जो क्लास में सबसे पीछे बैठता हूँ
मैं वही हूँ जो सबसे अलग दिखता हूँ
जी हां मैं वही हूँ जो क्लास में सबसे पीछे बैठता हूँ

दिनेश कुमार
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (अंग्रेजी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय महू

९९

वसुंधरा की पुकार

जल रहा है आसमान और तप रही है धरा
सुनो एक चित्कार, सुनो कि रो रही वसुंधरा
सुनो उसकी जुबानी सुनो,
आज उसी की कहानी सुनो।

ये पर्वत, प्रपात, पठार मेरा,
और नदियों की जलधार मेरा।
आज इसको क्या हो गया है,
देखों कहीं ये खो गया है।

आज समंदर भर रहा है प्लास्टिक के ढेरों से,
और हवाएं मैली हो गई काले धुओं के थपेड़ों से।

जो हरे भरे थे जंगल मेरे,
वो बदल रहे हैं शहरों में।
और कारखानों का विष मिला है
सागर की उठती लहरों में।

कितनों के घर छिन गए देखो
पेड़ों के कट जाने से।
और तुम्हें फुर्सत नहीं इनसे
अपने घर को सजाने से।

मेरी बर्फ की शिलाएं पिघल रही हैं,
कहीं धरती आग उगल रही है।
तुम मनुष्यों की बेपरवाही देखकर,
मेरी आत्मा भी जल रही है।

और कितनी मैं अपनी व्यथा सुनाऊं,
कितनी तुम्हारी गलतियां गिनाऊं।
मेरा तो वजूद खो गया तेरी इन किताबों में,
तुम भी कहीं खो जाओं न मेरे क्रोध के सैलाबों में।

पूनम कुमारी
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (विज्ञान)
केन्द्रीय विद्यालय, एन.आई.टी. सिलचर

100

बादल का जादू

काले बादल, घिर-घिर आ,
इस अंबर की शोभा बढ़ा।
तुझे पुकारे प्यासे जन,
घिर-घिर आ,
ओ ! काले घन।
धरती की इस माया में,
आसमान की छाया में,
तेरा रूप सलोना है,
कभी चांदी, कभी सोना है।
तुझमें छवियां दिखती अनेक,
पल-पल रूप बदलता देख,
विस्मय में पड़ जाती हूं,
समझ नहीं मैं पाती हूं।
कि रूई-सी कोमल काया में
कैसे जल भरकर ले आता है ?
जगत की प्यास बुझाता है।
निष्प्राण पड़ी इस धरती पर
जब -जब वृष्टि करता है,
अपने वरदानों के जादू से
नित नूतन सृष्टि रचता है।
ओ ! काले बादल घिर -घिर आ
धरती की तू प्यास बुझा,
जगत की तू प्यास बुझा।

सपना कुमारी
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय मोहाली

101

अवसर

अवसर मिले तो माँ को अपनी याद दिला आऊं
अवसर मिले तो बच्चों के सपनों में झांक आऊं
अवसर मिले तो पुराने सपने बुन आऊं
अवसर मिले तो सबके ग़म कहीं छोड़ आऊं

अवसर मिले तो सृष्टि फिर से रच आऊं
अवसर मिले तो बुद्धि में सिर्फ़ प्रेम भर आऊं
अवसर मिले तो पहाड़ों की चोटी छूं आऊं
अवसर मिले तो बादलों संग उड़ आऊं

अवसर मिले तो दुनिया बदल आऊं
अवसर मिले तो चांद ज़मी पर ले आऊं
अवसर मिले तो समय से परे निकल आऊं
अवसर मिले तो सितारों को छू आऊं

अवसर मिले तो खोये रिश्ते गढ़ आऊं
अवसर मिले तो व्यस्त आखों में नींद भर आऊं
अवसर मिले तो पीले पत्तों में हरियाली भर आऊं
अवसर मिले तो दिन को जगा आऊं
अवसर मिले तो रात को सुला आऊं

अर्चना राजेश
पुस्तकालयाध्यक्ष
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र.1, ग्वालियर

102

भटकाता मन

मन के पीछे चलने वाले
मन के साथ भटकना होगा

अभी-अभी जो देखी है जब
वो परछाईं तेरे सपनों की
प्रकट हुआ जो जीवन में है
परछाईं तेरे कर्मों की

मन के पीछे चलने वाले
मन के साथ भटकना होगा।

ज्ञान यहाँ फिर भी मिल जाये
मोह जो खुद से त्यागा ना जाए
अपने मन की मृग तृष्णा में
खुद ही तुमको जलना होगा

मन के पीछे चलने वाले
मन के साथ भटकना होगा।

मन के गहरे अंध तमस में
खुद को तू प्रकाशित कर
स्वयं जला कर अपने मन को
ज्योतिर्मय तुझे बनना होगा

मन के पीछे चलने वाले
मन के साथ भटकना होगा।
दूसरों की स्थिर शान्ति
पावनता लालायित करती
खुद ही अपना मार्ग समझ कर
अडिग उसी पर चलना होगा

मन के पीछे चलने वाले
मन के साथ भटकना होगा।

या पहले कोई एरियन हैन्सन
या कोई सुकरात पुराना
पढ़े बिना खुद अपने मन को
मन ही मन में मरना होगा

मन के पीछे चलने वाले
मन के साथ भटकना होगा।

दीपिका रानी
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (सामाजिक विज्ञान)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र.1 ग्वालियर

103

गुरु महिमा

हे गुरु, हे सारथी, हे ज्ञान के दीपक धरा के,
चरणकमलों में तुम्हारे, शिष्य का तुमको नमन है

तुम कुम्हारों की तरह, हमको नया आकार देते
तुम शिलाएं काट कर, इक देवता साकार देते
तुमने सींचे हैं जो पौधे, आज कोई वृक्ष बनकर
पालते हैं विश्व को, वह ज्ञान का भंडार देते

तुम उदित हो सूर्य से, तुम चंद्र हो, तुमको नमन है
हे गुरु, हे सारथी, हे ज्ञान के दीपक धरा के
चरणकमलो में तुम्हारे शिष्य का, तुमको नमन है

है तुम्हारी ही दया, तुलसी कबीरा आज गाए
यह तुम्हारा ज्ञान है, जो सारथी बन साथ जाए
चन्द्रगुप्तों चंद्रगुप्तो को धरा की आन यदि हम आज समझे
तो तुम्ही चाणक्य हो, जो इन पुरुष को साथ लाए

तुम ही द्रोणाचार्य, अर्जुन बाण हो, तुमको नमन है
हे गुरु, हे सारथी, हे ज्ञान के दीपक धरा के
चरण कमलों में तुम्हारे, शिष्य का तुमको नमन है

कितने अंगुलिमाल को बन बुद्ध तुम स्वीकार करते
तुम विवेकानंद बन इस विश्व को परिवार करते
कितने ही साधु-असाधु को जगत का ज्ञान देकर
तुम वाल्मीकि के मरा को राम कर उद्धार करते

तुम ही गीता-ज्ञान मानस-गान हो तुमको नमन है
हे गुरु, हे सारथी, हे ज्ञान के दीपक धरा के
चरणकमलो में तुम्हारे, शिष्य का तुमको नमन है

रवीन्द्र शुक्ला
प्राथमिक शिक्षक
केन्द्रीय विद्यालय एनटीपीसी शक्तिनगर, सोनभद्र

104

योग का महत्त्व

योग है जीवन के लिए वरदान
नियमित करें योग और ध्यान
शारीरिक मानसिक संतुलन रखता
आध्यात्म और प्रकृति से जोड़ता
योग है हमारी प्राचीन सभ्यता
स्वस्थ्य जीवन की इससे पहचान
योग है जीवन के लिए वरदान।

मांसपेशियों का होगा व्यायाम
अच्छी नींद से मिलेगा आराम
सही पाचन का होगा काम
दूर होंगे सब कष्ट तमाम
योग से है रोगों का निदान
योग है जीवन के लिए वरदान।

दूर करता मानसिक तनाव
प्रतिरोध क्षमता में करता बढ़ाव
अनुशासित होगा हमारा बर्ताव
सकारात्मक सोच का होगा भाव
योग मिटाये तन मन की थकान
योग है जीवन के लिए वरदान।

नियमित करो सब प्राणायाम
शरीर को मिलता है आराम
सभी आसनों का अलग है काम
सबका मिलता है उचित परिणाम
आओ करें योग का गुणगान
योग है जीवन के लिए वरदान
नियमित करें योग और ध्यान।

ओमप्रकाश चंद्राकर
प्राथमिक शिक्षक
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय महासमुंद

105

किसे ख़बर थी

किसे ख़बर थी, कब, कहाँ, किस मोड़ पर ज़िंदगी ले आएगी,
घर से कोसों दूर, एक नए नगर में बसाएगी।
अंजान नगर, अपरिचित गलियाँ, और भाषा भी अनजानी,
नए चेहरे, नया पथ, और उसमें रचने चली अपनी नई कहानी।
कभी संकोच से भरी, तो कभी साहस की झलक थी,
हर सवेरा एक नयी किरण, हर दिन एक नई पहल थी।
न जाने वे नन्हे मासूम बच्चे थे या नवपंखी परिंदे,
जिनकी मासूमियत ने मुझे अपने स्नेह से बाँध लिया चुपके।
कभी मुस्कुरा कर बोले, तो कभी चुपचाप रह गए,
मैं हर एक भंगिमा से उनके मन के भाव पढ़ती रह गई।
सशंकित थी, सहमी थी, हृदय में हलचल सी थी कहीं,
पर धीरे-धीरे समझने लगी — आइना हूँ मैं उन्हीं की कहीं।
कोई व्याकरण, न कोई भाषा का ज्ञान था,
जो था — वो बस प्रेम, अपनापन और लगाव था।
उनकी भोली बातों में जब अपनापन पाया,
तो लगा कि इस अजनबी शहर में भी एक अपना सा साया।

प्रांजल कुशवाहा
प्राथमिक शिक्षक
केन्द्रीय विद्यालय क्र. 1, जिपमेर कैंपस, पुडुचेरी

106

जीवन के फ़साने

जीवन की भी क्या कहानी है क्या इसके फ़साने हैं
कहीं रुदन है विलाप है तो कहीं खुशियों के गाने हैं
कोई चूर है जीत के नशे में तो किसी के पास हार के हजारों बहाने हैं
किसी के बने पराये अपने तो किसी के अपने भी बनते बेगाने हैं
कुछ तो उजालों में भी घबराये हैं और कुछ तो अंधेरों के दीवाने हैं
कई तो जुगनू से रातों में चमके हैं तो कई सूरज से होकर भी ढले हैं
कई नीर से होकर भी सूखे नहीं तो कई पाषाण से होकर भी गले हैं
कुछ तो खुशियों की शीतलता में ही झुलस गए कुछ तो गमों की आग में भी नहीं जले हैं
कुछ तो तारीफों की हवा में ही थरथरा गए और कुछ तानों के तूफान में भी पले हैं
कुछ ख़ालिस होकर भी बिके नहीं और कुछ खोटे सिक्के होकर भी चले हैं
कुछ को मिली हर मोड़ पर नई जिंदगी कई एक जिंदगी में मर-मर के जिए हैं
किसी को नसीब ना हुई जहर की बूंद भी कईओं ने अमृत से भरे प्याले पिए हैं
किसी को कमी ना थी मरहमों की किसी ने जख्म खुद के खुद ही सिए हैं
कोई निर्दोष होकर भी ग़ुनेहगार हुआ वो निर्दोष रहा जिसने हजारों गुनाह किये हैं
कोई मर गया विश्वास में पर विश्वास लायक ना हुआ विश्वास उन्ही पर ठहरा जिन्होंने विश्वासघात किया
दुनिया कहती है जीवन जी का जंजाल है जीवन तो सज़ा है
फिर भी धंसे पड़े हैं इसकी दलदल में जिसका अपना ही खेल है
बनावटी रिश्ते खोखली खुशियाँ और जीवन के मोह में अनमोल सांसों को तजा है
ना उम्मीदी के सागर की लहरों के शोर में भी हमने उम्मीदी का राग ही भजा है
खुशियों की झील में प्रेम की कश्ती पर बैठा हो सबका जीवन पवन की यही रज़ा है।

पवन कुमार
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2, जम्मू छावनी

107

गुरु का वादा

मैं हूँ ना

क्यों व्यर्थ तुम डरते हो,
क्यों ऐसी बातें करते हो ?
हिम्मत रखो, विश्वास करो, आगे बढ़ो,
मेरे साथ चलो, मैं हूँ ना, हां, मैं हूँ ना।

मैं अपना हाथ बढ़ाऊंगा, तुममें विश्वास जगाऊंगा,
रोज नए-नए सबक बताऊंगा, खेल-खेल में सिखाऊंगा,
सोचना सिखाऊंगा, तुम्हारे हर सवाल का जवाब बन जाऊंगा।
हिम्मत रख, विश्वास कर, आगे बढ़,
मेरे साथ चल, मैं हूँ ना, हां, मैं हूँ ना।

तुम भी फूलों-सा खिलोगे, तुम भी पौधे से पनपोगे,
तुम भी तारों से चमकोगे, तुम भी बादल से बरसोगे।

तुम भी ऊँचा उड़ पाओगे, नई कहानियाँ गढ़ पाओगे,
हिम्मत रख, विश्वास कर, आगे बढ़,
मेरे साथ चल, मैं हूँ ना, हां, मैं हूँ ना।

मैं तुझे वो राह दिखाऊंगा, जो अंधेरों में भी चमकेगी,
तेरी मुश्किलों को आसान बनाकर, हर कदम नई उम्मीद दमकेगी।

तेरे हर सवाल का उत्तर दूंगा, तेरे सपनों को ऊँचाई दूंगा,
तेरी क्षमताओं को पहचान कर, तुझे खुद पर विश्वास दिलाऊंगा।

हिम्मत रख, विश्वास कर, आगे बढ़,
मेरे साथ चल, मैं हूँ ना, हां, मैं हूँ ना।

वादा है मेरा, हार और जीत दोनों सिखाऊंगा,
हर ठोकर के बाद कैसे उठना है, ये बताऊंगा।
तेरी सोच को हकीकत बनाने की कला सिखाऊंगा,
तेरे भीतर छिपी शक्ति को जगाऊंगा। तुझे इक्कीसवीं सदी का नागरिक बनाऊंगा
हिम्मत रख, विश्वास कर, आगे बढ़,
मेरे साथ चल, मैं हूँ ना, हां, मैं हूँ ना।

हाथ थामकर चलूँगा साथ तेरे, तुझे तेरी ही पहचान बताऊंगा।
कभी न हारना, ये मेरी सीख रहेगी, तेरी हर जीत पर ख़ुशी मनाऊंगा।
तुझे जीवन के पथ पर सशक्त बनाऊंगा। गुरु होने का धर्म निभाऊंगा,

यह वादा है मेरा, वादा है मेरा, वादा है मेरा

हिम्मत रख, विश्वास कर, आगे बढ़,
मेरे साथ चल, मैं हूँ ना, हां, मैं हूँ ना।

चंद्रशेखर आजाद
उपायुक्त
के.वि.सं. क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी

108

माँ तेरे पास होने का एहसास

तेरे पास होने का एहसास
तेरी धड़कन के धड़कने का एहसास
हर सांस में बसने का एहसास
तेरे रक्त के हर कतरे में बसे होने का एहसास

जिंदगी के कुछ यूँ ही गुजरने का एहसास
छल कपट, इर्ष्या द्वेष से विरत रहने का एहसास
ममत्व ममता से परिपूर्ण होने का एहसास

काश तेरा यह भाव, तेरी यह विशेषता
संघर्षरत देशों को भी समझ आ जाये
मानवता पर छाया संकट कुछ टल जाये
तू है बस इतना ही काफी है माँ

तेरे दर्द जदा होकर भी मुस्कुराने का एहसास
बीमारियों से लड़कर उबरने का एहसास
अपनों से मिलकर लिपटने का एहसास
जिंदगी के फलसफे पर चलने का एहसास

तेरी इबादत की राहों पे चलने का एहसास
तेरा साथ हमेशा यूँ ही बना रहने का एहसास
काश! ये एहसास यूँ ही बना रहे माँ
काश! ये एहसास यूँ ही बना रहे माँ ।

प्रवीण कुमार
सहायक आयुक्त (प्रशासन)
केन्द्रीय विद्यालय संगठन (मु.)

109

काव्य मंजरी की गाथा

मैं वही तुम्हारी काव्य मंजरी हूँ,
जो तुम्हारी मेहनत, लगन और कोशिशों से बनी हूँ।
तुम्हारे हर अधूरे जज्बातों को मैंने रूप दिया है,
तुम्हारी चुप सी कहानी को मैंने शब्दों में जिया है ।।
मैं वही तुम्हारी ...

मैं तुम्हारे मौन की मुखर परिभाषा हूँ,
मैं हर भावना की कोमल अभिलाषा हूँ।
जब सिलकर दर्दों को कवि कविता कोई रचता है,
मैं देती हूं अपने आंचल की छांव, तभी नया कवि पनपता है ।।
मैं वही तुम्हारी ...

मैं अल्फाज नहीं, एहसासों की रवानी हूँ,
कभी धूप, कभी छांव सी कहानी हूँ।
मैं अंधेरी रातों की तन्हाई से निकली किरण हूँ,
हां, तुम्हारे हृदय के दीपों में जलती शरण हूँ ।।
मैं वही तुम्हारी ...

हर मिसरे में तुम्हारा रंग बसता है,
तुम सब की कोशिशें ही मेरी पहचान है।
तो जब भी कलम उठे, मैं साथ हूँ,
तुम्हारे ख्यालों का ख्याल, बातों में बात हूँ ।।
मैं वही तुम्हारी ...

अब अंक मेरा 19वां आ गया,
फिर से मुझे नए रूप में सजा गया।
शिक्षकों की रचनात्मकता को प्रेरित कर, प्रति वर्ष सपने साकार करती हूँ,
साहित्यिक परंपराओं को सजाने का लघु प्रयास करती हूँ।।

सच में, मैं वही काव्य मंजरी हूँ,
जो तुम्हारी मेहनत, लगन और कोशिशों से बनी,
तुम्हारे सपने साकार करती हूँ।।

शंकर दास मेहता
स्नातकोतर शिक्षक (गणित)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय चेनानी

110

Chalk Dust and New Dawns: A KVS Ode to NEP

In the quiet hum of morning assemblies,
amidst the rustle of uniforms and ringing bells,
change walked in—not with fanfare, but with purpose,
wearing the name of the New Education Policy.

We, the teachers of Kendriya Vidyalayas,
guardians of generations and dreams,
felt the shift like the season's first breeze—
gentle, yet stirring every leaf of tradition.

No longer were children vessels to be filled,
but lamps to be lit—each with a flame unique,
each voice now heard,
not hushed in a single textbook's word.

The mother tongue stepped proudly into classrooms,
as Sanskrit smiled from the blackboard's curve,
and coding danced beside poetry,
while the arts—long silenced—found their verve.

Subjects shed their silos, integration began to bloom—
math met music,
science shook hands with history,
learning stepped out of the room.

From rote to reason,
from rank to understanding,
we reshaped our roles— no longer mere instructors,
but mentors with soul.

Exams now whispered less of fear,
and more of feedback—
for growth, not just grade,
for curiosity, not just marks made.

In every KV across the land,
from Leh to Kerala's sand,
equity became the anthem sung,
and innovation, the air on every rung.

Digital boards glowed with possibilities,
teachers trained, transformed,
learnt again to unlearn—
for change, we knew, begins within.

The NEP did not erase the old,
it rewrote it in a future's gold—
with flexibility, choice, and the child's true voice
rising like a morning song.

We are the bridges between policy and practice,
between vision and child— and as we walk this evolving road,
we carry the tricolor in our chalk-dusted hands,
and the nation's tomorrow in each child's smile.

Aviral Khurana
PGT (English)
PM SHRI KV No. 1 Gorakhpur

NEP 2020: Every Child, Every Dream

In 2020 a vision was born,
to guide young minds from dust to dawn.
A vision born from mind so wise,
to see our youth begin to rise

No more fences, no fixed stream;
every student holds a dream.
A child can choose and can mix and match;
no subject now is locked or latched.

Holistic growth is not just a grade,
but strength of mind and choices made.
Art or science, sports or trade
every skill has value made.

Report cards now will truly show
how students learn and how they grow.
Regional roots are our culture's song,
in every tongue we now belong.

With the mother tongue to start the way,
confidence bloom day by day.
A breeze of change a thoughtful shift,
to give young minds a precious gift

NEP is more than a reform;
it's India's future taking form.

Nidhi Chand
PGT (Biology)
PM SHRI KV No. 1 HBK, Dehradun

112

PM SHRI Scheme - A Visionary Change

PM SHRI is a vision to change Scholar's Life,
Schools of Rising India will take nation to new height

Students steer clear of rote memorization,
21st century skills inculcated as characterization
Science and Math club ignite the passion,
Learning is fun through STEM demonstration.

Owing to TLM, learning outcomes are achievable,
Toys and Magic Slates uplift spirit undefinable
Smart classroom augment teaching Learning,
Phygital resources of Library satiate yearning

Playing a melody on musical instruments fosters creativity,
Kala Utsav and EBSB instill a sense of Unity
Sports and Yoga elevate students' fitness
Self defence training raise safety and situational awareness

Dignity of labour is infused through bagless day,
Vocational training grooms students in earnest way
Students cherish Nature as profound educator,
Gardening and composting define job of eco warrior

Medical Checkups preserve health of all including Children with Special need,
Guidance and counselling assist teenagers during psychological needs
Field visit and excursion opened the gates of best Institution,
Experts from different walks are source of inspiration

PM SHRI scheme has raised the standards of School,
Its six pillars have generated a vast resource pool
It's time to make future ready citizen through excellent education,
Let's put in our best effort and showcase NEP 2020 implementation

Chitra Kathuria
PGT (Biology)
PM SHRI KV No. 1 Patiala Cantt.

113

Every Voice at the Table - Inclusive Education

In a classroom bright with eager eyes
Where dreams take shape and spirit rise
Within these walls of chalk and light
No heart too quiet, no mind too bright.

Every voice is a part, each soul has a space
Diversity threads through learning in pace
Some see letters, shape, sign and sound
Every language here is found.

Every child a unique soul
Deserves a chance to reach their goal
Not left behind not pulled away
But held in learning vibrant way.

No barriers no boundaries no fears
Just opportunity and endless cheers
So let us pledge each voice to hear
Each mind to hold each heart to sheer.

Let's learn together hand in hand
Embracing differences in this inclusive land
Where every voice is heard and seen
And every child can thrive and dream.

Arpana Kumar Jha
PGT (Biology)
KV ONGC Agartala

114

Operation Sindoor

In the heart of paradise
The mini Switzerland of India
Silence shattered,
Blood was spilled
Twenty-six souls—gone
Dreams drowned in dust and despair

How can anyone be so cruel?
Are hearts now carved of stone?

Sirens scream through the night,
Blackouts paint the skies with fear.
Every shadow—
Every heartbeat—
A prayer

But even in darkness,
Heroes rise
Salute to the brave—
Our Army, our Navy, our fearless pilots
Guardians of hope
In times of horror

Let us unite.
Let us hold on—
To the light that flickers still
Let us believe—
In the promise of dawn.

Together we must stand,
Hand in hand,
Heart to heart,
To silence the guns,
To cleanse the skies,
To end the bloodshed.

Peace is not a dream—
It is a choice
And it begins with us
Let peace prevail
Wish for peace everywhere.

Shashi Dawra
TGT (English)
PM SHRI KV Raiwala

115

India: A Living Hymn of Unity

In every tongue that weaves a song,
From Ganga's hymns to Himalayas strong,
Folk arts, melodies, and rhythms align,
In unity, our souls keep time.

Saffron sunsets on deserts wide,
Emerald fields where rivers glide,
Festivals paint the skies with light,
Colours of faith in a joyful sight.

Soldiers guard with valour untold,
In icy heights and deserts bold,
A billion hopes in harmony rise,
Under tricolour skies so wise.

O India, land of timeless grace,
Where differences in love embrace,
You teach the world what peace can be,
A living hymn of unity.

Mansi Hathi
TGT (English)
PM SHRI KV Tirumalagiri

116

Naughty Nuts

There are a lot of ifs and buts,
When you teach to the class of naughty nuts.
Clatter, clank and jangling sound,
When these naughty nuts are around.

When you enter, they whisper and hear,
All feel that they are in fear.
But reality is that, they have the art,
To talk and discuss without chat.

To do work, they would pretend,
To create fun, they intend.
Perplexity I found in handling them,
In slouching position, they will bend.

Pretend to do homework with skill,
But actually, this time they chill.
Enjoying the age and carefree life,
Making fun without strive.

Worry free mind of naughty nuts,
After the school go to their huts.
It reminds me my own time,
That give joy to my life.

I live my childhood with them daily,
Thinking, that won't be silly.

Rita Attri
TGT (English)
PM SHRI KV Sector 31, Chandigarh

117

Come Again, Dear Gandhi Ji

Come again, Dear Gandhi Ji,
The world still longs for peace, you see.
Hatred spreads both far and wide,
Let truth and love be our guide.

In chasing growth, we lost our way,
Our values dim with each new day.
Old bonds once strong have slipped apart,
We need your dream to warm each heart.

Come again, Dear Gandhi Ji...

Upon this land of saints and seers,
We've shed too many silent tears.
The ties once Dear have gone astray,
Please help us bring them back today.

Let freedom shine in every land,
Let all together proudly stand.
Its real meaning we must show,
So every soul may truly grow.

Come again, Dear Gandhi Ji...

Our breath runs fast, the times are new,
But still we search for what is true.
Modern life feels cold and wide,
We need your truth to be our guide.

With peace and love, you led before,
And saved this nation we adore.
Come light the world just like a star,
And make us proud of who we are.

Come again, Dear Gandhi Ji...

Amit Gupta
PGT (Maths)
PM SHRI KV No. 4 Gwalior

118

Solitude

Some say they are scared of it
Some say come what may
The only thing they never would want
Is the solitude's dismay

For Man is but a social being
And love he does a friend
It sure is hard to stay alone
When flocking for fun is trend

May I but for once draw you
To the bliss of being alone
When noises cease to plague our minds
In a sacred, silent zone

Now here we find a union new
With our soul, our mind, our heart
And here it is that we may get
A chance to hone our art

The quiet talk, the looking in
Into our deepest layers
To lose oneself in what is one
Beyond the worldly cares

For is it not for fact we are
In the best of all company
While trying to walk on a solo path
To weave a solo symphony?

So, tread on O my fearless soul!
If no one walks with you
Stress no more for Solitude
Will help you discover you.

Jhanjha Chakravarty
PGT (English)
PM SHRI KV No. 3 Delhi Cantt.

119

Between Desks and Beyond the Bell

Despite the mosaic mindscapes,
The struggle for self-definition,
And the search for meaning,
They do learn together in the classroom.

Someone in the right-hand corner
Mists her eyes
On hearing the word *"father."*

Here in the middle, he plays football
On an empty stomach.
On enquiry, he confesses—
No one is at home
To prepare and parcel.

Don't you see the thin boy
Who lost his leg in an accident?
He has decided
To like chess.

The silence gathered in the front left side
Declares that their homes
Have dark corners.

The one who refuses to sit
Is labelled for his uniqueness.
The latecomer never fails to smile—
Even while he rushes home at the evening bell
To bathe his paralysed father.

The realities they face
Are the hues of a faded landscape.
In the forty minutes inside,
And many a time outside,
We do learn from each other.
We do celebrate our diversity.

Soniya Joseph
PGT (English)
PM SHRI KV Hebbal

120

For You, My Parents

I remember my childhood days,
Those were full of innocence craze
With mother's love and father's gentle embrace
No time can wash that luminous phase.

They teach me to look on bright side of things
They give my dreams wings
They support me through bad days,
To envision world in a thousand ways.

My folks teach me how to be strong
If anything goes astray and wrong.
To live with determination and grit
To tackle obstacle with a mind fit.

My parents are my gems
and My world revolves around them.
With their blessings, I nurture and thrive,
They lift me high and make my spirit come alive.

Sweta Jainwal
TGT (English)
PM SHRI KV No. 1 Udhampur

121

This is Nature

See - This is nature, our treasure and guide,
On her strength, our future ride.

See - This is a tree- Remember, it's not just free,
A gift of life, for you and me.
Trees are so precious, roots run deep,
To cut them is senseless, we all will weep.

See - This is Mother Earth,
To nourish us, there's no dearth.
But if we act with greedy hands,
She will bleed and burn across her lands.

See - We have no planet B to find,
So let us shift our heart and mind.
There's no choice for settlement-
Only one path - save the environment.

Gagan Lata
TGT (English)
PM SHRI KV Mohali

122

Equal Wings for Equal Flight

I do not march with banners high,
Nor shout my cause beneath the sky.
I do not claim a louder voice,
But I believe we all have a choice.

I do not fight to rise above,
But seek a world that's built on love.
Not man, Not woman, strong or weak,
It's fairness, justice that I seek.

I do not ask for special grace,
Just equal footing, equal space.
To learn, to lead, to dream, to be,
Not bound by chains of history.

Call me what you will today,
Labels matter less than way.
I may not wear a feminist name
But equality is still my flame.

I am not a feminist, yet I stand,
For dignity, fairness- hand in hand.
Not in a fight, but in a dream,
Where respect and love reign supreme.

Elice Benny
PGT (English)
KV CRPF Peringome

123

You are my Dedication (A Tribute to my Students)

You are my dedication,
My devotion is for you
Some days, frustration takes its course
Then your inspiration is my force!

In my classroom, I am there—
Every day, with care to spare
Talking to faces, with warmth I share,
A thousand feelings floating in the air.

Each day, your smiling faces
Fade the weight of paperwork races
Your laughter, questions, joys, and grace
Bring purpose to this sacred space.

I speak, I guide, I learn anew,
For every word I share with you
Returns with grace, a deeper truth,
A bond eternal, built in youth!

You have made me—
An actor on an unseen stage,
A nurse who soothes both wound and rage,
A coach who cheers you toward your goal,
A psychologist who knows your soul.

A substitute parent, firm yet kind,
A keeper of faith in heart and mind
You are the reason I stand so true—
Beloved scholars
My dedication is for you.

Kamlesh Joshi
TGT (English)
PM SHRI KV Ajni, Nagpur

124

The Teacher as Facilitator

Not only a voice at the front of the room,
But a mentor who assists each student through.

A spark, a light in the search to understand,
You sow the seeds and allow us to expand
You inquire, not dictate, you prod, not push,
You guide with patience, compassion, and love.

No strict instructions, no one path,
You assist us in finding our own way back
You do not see clay, but minds to shape
With dreams unspoken and hearts so brave.

You open doors, then step aside,
And watch us learn, and leap, and soar
You don't expect us all to think the same,
But test our thinking, and free the mind.

You hear more than you say,
And forge a bond so rich and rare
A coach, a mentor, always near,
You turn our doubt to bright, clear cheer.

In every fall, every attempt,
You lift us up and set us flying.
So, here's to you, our guiding star,
Who shows us who we are?

A teacher, yes—but more than that—
A facilitator in learning's hat.

Laxmi Devi
Librarian
PM SHRI KV AFS Kasauli

125

In God's Design

God gives us sorrows,
Not out of spite,
But to test our spirit,
And lead us to light.

We must receive
Each trial with grace,
And face the storm
With a steady face.

All pain shall pass —
It won't last long.
We rise again,
More wise, more strong.

God gave us gifts,
Talents and will.
In darkest hours,
They shine brighter still.

Still we complain,
And question His way,
Forgetting His wisdom
Outshines what we pray.

He knows our needs,
Our path, our part.
He gives what's best
To our soul and heart.

Ajay Kumar
Assistant Education Officer
KVS (HQ)

126

The New-Age Classroom: Where Dreams Take Flight

Gone are the classrooms, where blackboard once ruled the day,
With tech-driven environment, winds of change now find their way.
Chalk-dust vanished from the teacher's table and no cane rigid and long,
Making room for every mind that dares to dream big and strong.

Tiny tots are no longer bound by rituals of rote and drill,
Now every teacher ought to teach with heart and will.
The landscape changing from narrow rows of desks to activity circle,
Where young minds bloom and ideas reach their pinnacle.

Walls are glowing with smart screens so bright,
Touch and click replace the write.
Making way to bring the universe into the room,
At their own pace, letting the learners bloom.

In the present world, mere content mastery is no more required,
Let's ensure that by each learner, conceptual clarity is acquired.
Making classrooms, where every child shines like a star,
For them, no hurdle is impossible to cross and no goal is too far.

Technology in teaching-learning, paves the new way,
Bringing textual content to life each new day.
But screens and visuals alone won't light the spark,
It's a committed teacher's soul that leaves the mark.

Inclusion is an umbrella which gives shelter to all,
Equity when practiced supports the trembling from fall.
A joyful classroom is the one that embraces the latest trends,
Where questions are aired fearlessly and learning never ends.

A knowledgeable teacher in the role of a skilled facilitator,
Fosters rich learning environment and boundaries hardly matter.
The new-age classrooms provide children wings to fly,
Where their hopes and aspirations always touch the sky.

D. Vikram Kumar Varma
Training Associate
KVS ZIET Bhubaneswar

127

A World without Walls

Imagine a world where love is the key,
Where hearts speak louder than what eyes see.
No fences, no fears, just open skies,
Where every tear is met with wise replies.

In Kendriya Vidyalayas, we dare to dream,
Of kindness flowing like a stream.
We learn to share, to heal, to grow,
And spread the light wherever we go.

Our voices rise not just in song,
But in standing up for right over wrong.
In every book, in every game,
We carry values, not just a name.

Our teachers show us how to be,
Not just smart, but truly free.
With courage drawn from truth and grace,
We build a better and safer place.

No war, no hate, no silent cries,
Just hopeful hearts and brighter skies.
Let bridges rise where walls once stood,
And turn each wound into something good.

So let us build this world with care,
With thoughts that lift and hands that share.
From every corner, every hall —
We'll break the silence, break the wall.

Pratima
PRT (Music)
PM SHRI KV No. 1, Udhampur

128

Let them Grow

Let them study
Let them play
Let them create their own toy

Let them break
Let them mend
Let them learn at their own pace

Let them fall
Let them rise
Let them handle in their own way

Let them query
Let them find
Let them decide their pathway

Let them ask
Let them tell
Let them question the old ways

Let's join hands to prepare them for the future
As one day they'll lead the Nation

Sonia Jain
Principal
PM SHRI KV No. 1, Devlali

129

What It Is?

To ask a question is a noble deed,
The finest trait a student can breed.
We need not stop at what it is—
Ask why, and the answer seldom misses.
How it happens is vital too,
And that's how real learning comes through.
The story doesn't end just here,
A question can make the truth appear.
So, as a teacher, here's my saying:
Let questions guide you every day.
Don't chase answers with all your might,
Sometimes, a question brings more light.

Ravindra Kumar
TGT (English)
KV NHPC Dharchula

130

Discouraged versus Empowered

Her weary eyes droop low
Her smile, a faint and fleeting glow
She trudges on, with heavy feet
Her energy, a dwindling beat

Is it the work that weighs her down?
The tasks that pile, the deadlines that frown?
Or is it life's own heavy toll?
The stress, the strain, the endless role?

Perhaps she's lost in thought and care
Her mind a maze, her heart aware
Of all the things she'd like to do
But time and strength, they flee from view

Whatever the reason, she's tired
Her body worn, her spirit fired
Let's lend a hand, a listening ear
And help her find her strength, her cheer.

VS

The Empowered Senora
Senorita with a poet's heart so bright
Weaves words into tapestries of delight
With gazelle's grace and Teacher's flair
She guides young minds with love and care

As a Mom, her love shines like a beacon true
Nurturing dreams, both old and new.
Her passion for Life, a gift to share,
Inspires others, beyond compare.

With every act, a piece of her soul
A reflection of love that makes us whole.
Mademoiselle- a treasure, rare and kind.
A Poet/ An Astronaut /A Home-maker: One of a kind.

Pushpa Sharma
Principal
PM SHRI KV Zirakpur

131

Summer Musings

Real insights into life, this summer vacation has given me
To be alive is indeed a blessing and not everyone is that blessed, though
Why are we humans engaged 24x7 in a mad rush?
The sprint after money, power, position, fame and what not!
The ultimate aim being happiness and peace – the rarest treasures!

Amidst the hectic schedule and cut-throat competition
Have we ever pondered upon the queer reality of life?
Life is not something to be lived later
It's what is happening right now in our life
As I write this down and as you read this!

Sitting in the matchbox apartment balcony in the midst of a metro-city,
Where life moves fast and people rarely greet each other,
This summer let me reflect upon our life – the real Janus
The scorching heat of the summer matches our tensions, stress and anxieties.
The cool summer rains being the small blessings sprinkled upon us from the Heavens!

Our life too has an external and an internal realm
The external like the busy side of the city- all chaos and noise
The internal, the serene backwaters of the city – all orderly and calm.
Let's take the external and the internal - the physical and the mental planes together
And find a balance in life where one does not dominate over the other.

Maintaining an equilibrium of both sides is the real challenge
Throughout one's life, every single one of us needs to face it!
Though we move in densely packed time-frames, ever busy – the pragmatic aspect
Let us find our own moments of peace and small joys- the humanitarian aspect
And let stable peace come out of this disturbing chaos, making our lives worthy!

Life is no chase, it is the very involvement of us in every moment of life
In everything and everyone around us, through selfless love and consideration,
Touching other's lives through understanding, compassion and genuine care
Let's make everyone around us feel worthy, happy and important
Making the planet a really beautiful place for every living being!

Ciny Sivasanker
PGT (English)
PM SHRI KV Konni Pathanamthitta

132

World of Happiness

It's this haven of innocent souls
Of merry laughter
Where mischiefs and frolic unfold
Happy smiles thrown at you

Oblivion to miseries and woes
Young hearts entering through
Twinkling curious eyes
Blinking at novel land

Seeking familiar ties
Soon merge and melt
Into new world
Making their presence felt

In years through, they grew
Mature and immature altogether
New ways and dilemmas new
How amazing to acquire this art

A frown that hints re-teaching
A content smile of comprehension
Indifferent eyes of resentments
Downcast gazes of regrets

Surround us with selfless love
Fortunate to be in this world of happiness
Drenching in its warm sunlight
Day in and day out in abundance

In them, we perceive a mirror
That we once used to be
And in this journey of adulthood
The child in us never ceased to be!

Nisha Krishnankutty
PGT (English)
PM SHRI KV AFS Akkulam

133

The Tree of Life

No rain or storms or thunder,
Can ever match this wonder.
It's arms are spread at length,
Under it sages take a deep breath.

Whose shade knows no bounds,
To shelter deer, doves or hounds.
Fragrant flowers of this tree foster,
The souls of the ones who ponder.

Its youth goes down to its fruit,
No sign of ache reflects its shoot.
Without a farewell departs its seed,
The moment when the tree is in need.

To mourn the loss, it sheds the leaf,
The tree gives life and dies with relief.

Tree of life is a metaphor for father & seed symbolizes an offspring. Deer, doves and hounds symbolize different kinds of relatives who are taken care of by a father.

Abdullah Haris
PRT
PM SHRI KV Saharsa

134

Why this Endless Fire?

The sky once blue now bleeds with flame,
A cradle turns to a soldier's frame.
Fields of grain are scorched and bare,
And lullabies dissolve in air.

Tanks thunder where children played,
Hope retreats in the shadow's shade.
The sun sets red on shattered lands,
While silence screams through broken sands.

The rivers weep in crimson flow,
Carrying tales of grief and woe.
The stars above avert their gaze,
Ashamed to shine through war's dark haze.

Steel speaks louder than prayer or plea,
And homes drown deep in a warring sea.
A mother wails where peace once bloomed,
Another promise lies entombed.

O brothers! Why this endless fire?
Who stitched this world with barbed-wire?
The earth is not a chessboard game,
Where kings trade lives for fleeting fame.

Let not our tongues be swords again,
Let hearts not harden in hate's domain.
For every bomb a grave is born,
And every war leaves the planet torn.

Come, let us plant where we have burned,
And teach the peace we've never learned.
Let faith not fracture, race not rise,
Above the blood in every eye.

Raise not your guns — raise hands instead,
Let roses bloom where once we bled.
Let nations kneel not in defeat,
But stand as one, in love complete.

Rattan Singh
PGT (English)
KV NTPC Shaktinagar

135

The Sail of Truth

The boat of truth may tilt and topple
Storm may trouble, wind may howl
On its way through waves,
it may face a tide or troubles from all sides
It may suffer a setback once or twice
The sloop may face the surf and strife
But truth can never, never sink
Truth may defer, truth may delay
But truth wins at the end of the day
Truth cannot ever drown.

The boat may have its engine failed
It may be at times derailed
The sloop may stop in a deluge of doubt
With none to offer from the storm, a refuge
It seeks no refuge for truth is its own shelter
Though hundred stones the world may pelter
Truth holds its ground with a pure and untainted heart
Tossed by waves and faltered by raves
The boat of truth still sails its way
It may take time, of this no doubt
But its end is certainly bright and sweet.

Truth stands alone and remains the same
It attracts no crowd and seeks no fame
Unmoved by any loud acclaim
It dwells in silence, taciturn and still
Unshaken even by the strongest will
For truth it is and always will,
For truth it is and always will.

Truth may face a hundred trials
Truth may undergo the toughest ordeals
But truth it is that always wins
From the darkest nights, the day begins

Mridula Gopinath
PGT (English)
PM SHRI KV No. 2, Vasco Da Gama

136

Let's Wake Up

Let's catch the burning firefly
And ignite your sins.
Let's embrace the falling sky
And lift up from ruins.

Let's dig the hideous mud
And bury your pride.
Let's free the prisoned bird
And cage your flattering guide.

Let's pluck the dying rose
And sow some promising seeds.
Let's break the insincere vows
And tie your bundle of needs.

Let's tear the pages of past
And bind your shredded trust.
Let's subdue the spreading overcast
And hover as a blissful gust.

Let's hope for a better tomorrow
And make this life worthwhile.
Let's say goodbye to the deepening sorrow
And walk around with a blooming smile.

Sonali Goel
TGT (Science)
PM SHRI KV No. 1 OE, Tiruchirappalli

137

If Shoes Could Talk

Don't ask me the story of my life—
The path I travelled, the flipped stones,
The destiny unknown
And the joy of reaching someone I called my own.
The childhood game of hide and seek,
Where steps followed lanes unknown.
Where feet counted the stairs to reach home.
It knew every tear that fell to the ground.
It knew every joy that danced on it.
It knew every moment—
Until one day, its soul grew tired
And with a heavy heart, I said goodbye.
It left me alone,
Replaced by another soul of its kind
To witness my story in silence.
It saw me fall.
It saw me evolve.
I kept whispering, "One more step before I quit."
Don't ask me the story of my life.
It would unleash a million stories—
If shoes could talk.

Mamta Singh
TGT (English)
PM SHRI KV AFS Kumbhirgram

138

Mirrors of the Mind

From the thickets of a bustling din,
Begins the path we're thrust within.
Hold yourself—for just a stint—
And face the fate you never hint.

For every thorn that breaks your skin
Is but the price of truth within—
A toll to pass through thought's own gate,
To weigh the self, to question fate.

No path is straight, nor wholly kind;
The maze is carved inside the mind.
And what you fear, and what you seek,
Are mirrors both—the strong and weak

So, pause, and in the hush, reflect:
The soul is shaped by what we elect.

Time walks not fast, nor lags behind—
It waits within the present mind.
The clocks you chase, the days you dread,
Are echoes of the life you've led.

To find the self is not to flee,
But lose the need for certainty.
And in that loss, a light may start—
Not in the sky, but in the heart.

Thati Devivara
PRT
PM SHRI KV No. 1 Tirupati

139

Sensitizing Senses

Why the Hands are eager only to grab?
They can share the fortune that others don't have.

The essences of Eyes are not meant for sight,
But to shed a few drops at others' plight.

The nose is not just for only to smell,
Rather, sensing the appetite for a man fails to spell.

Ears are here not for mere euphony,
They may hear and care for the victim's agony.

Tongue, for the taste? Or twist the things unheard?
Can't it console the stressed with a sweet word?

"Our Senses are selfish" When do we make them awake?
To be sensitized and serve for others' sake.

"To explore us within" and our lovely nature,
We are blessed with senses- and a "Mind" to guide them forever.

Sameer Kumar Kalas
TGT (English)
PM SHRI KV No. 5 Bhubaneswar

140

Spell

A machine works tireless, day and night
Morn to dusk through dark and light
Nothing for joy saves numb dryness

A drone of daily humdrum ceaseless.
Haunted by spells of being lonely
I am taken by fatigue but when suddenly

A soft breeze blows,
A happy stillness flows,
Wafting through the windows,
A sweet scent glows.

The overhead blue
Turns black in hue
Beating drums too
Give a welcome clue

Now stop your bore
Let's be to the door
And watch to the core
Beaming outpour

My toddler now jumps,
His little heart thumps.
The more it trumps,
The more he jumps.

A roll of thunder;
A lightening in splendor
Rends the sky asunder,
He gapes in wonder.

It starts now streaming
Cats and dogs raining
My little one's dreaming
Curiosity brimming.

And down he hops
To catch rain drops
With small wet palms
My cheeks he mops.

Sandesh Ravindra Ninawe
PGT (English)
PM SHRI KV Khairagarh

141

One Crucial Step

It starts with struggle and stutter
When we, our first words, utter.
But as we churn them day and night
They come out smooth like it’s butter.

It starts with an unbearable pain
When we, our first run, complete.
But day by day as we push more hard
The restraining pain goes obsolete.

Only dust and bricks and concrete prevail
At a construction- site, making us feel sick.
But as we join everything brick by brick
It turns out into a beautiful work, seemingly a magic.

Life seems to be full of challenges as we live it,
Shattering our hopes for happiness into pieces.
But when we lower our pace and give optimum time to it
It is the same life that showers the solution and eases.

Let us promise everyday a hope to the life
By not letting many darknesses drown us deeper,
But by patiently waiting and seeking that single light
That will let us take the crucial step - making life richer.

Prashant Kumar Pandey
TGT (English)
PM SHRI KV No. 1 OE, Tiruchirappalli

142

A Tapestry of Minds

In Bharat's heart, where wisdom's roots run deep,
A new dawn breaks, secrets it won't keep.
For every child, a right, a guiding star,
No mind left behind, no dream too far.

From bustling cities to hamlets serene,
A chorus rises, vibrant and keen.
No longer silenced, voices softly heard,
Each unique journey, a hopeful word.

The classroom walls, now stretching wide and free,
Embrace each spirit, for all to see.
A different stride, a different way to learn,
With patience taught, and understanding's burn.

For those who see the world in hues untold,
And those whose touch their stories unfold,
For restless spirits, and minds that gleam,
We build a bridge, fulfilling every dream.

No more dividing lines, no whispered doubt,
But open arms, where talents blossom out.
In unity, our knowledge we shall share,
A tapestry woven, with love and care.

So let us pledge, with hearts both strong and true,
To nurture all, in all that we pursue.
For India's future, bright and ever grand,
Begins with inclusion, hand in helping hand.

Kamal Jit
PRT
PM SHRI KV 3BRD AFS, Chandigarh

143

Bliss

The white sky, wearing blurry specs,
Fog wins showing sun the face of grimace.
The sun cares not, it's time to bid good bye,
Behind the hills leaping part by part now.

Yonder, a shadowy figure up the hills,
Bearing sacks and shallow plight as well.
But, But not alone she is-
Clasping her finger her little doll beside.

Amid the tea trees she springs and hops,
Knowing and sharing none of mother's misery,
Busy in idle surge of happy glory.
The worn out, drowsy mother now sits down,

Beside her the joyful daughter is running along.
Run and run behind the firefly unfurling her dreamy eyes,
She craves to catch that, wandering in the open sky.
At last, succeeds in her goal comes nigh to her mother,

Whispers, "See mum, what is here!"
Responding to her daughter she opens her eyes,
A sparkling dazzle catches her sight.
Beaming up and down, it spreads glow everywhere,

Enkindles hope, revives vigour in the mother.
Now she wakes up with smiling lips,
And the little lady dances, celebrating her achievements.
Nature also, sharing her joy begins its musical rhyming.
Taking together the cool breeze, welcoming the pleasant raining.

Mou Bhattacharjee
TGT (English)
KV Ambassa, Tripura

144

They are Unstoppable

I stand wondering
How will I make the aura
Where they feel at ease
And well up on ‘learning and doing’ with peace.

I know I need to be little flexible
Be more supportive and show compassion
Drive them to speak and show up
How they feel and not give up.

I need to scaffold them in everyway
Help them to collaborate with peers
Facilitate them to language uptake
Let them know they are unstoppable at every step they take.

Anita Christopher Paul
Headmistress
PM SHRI KV Army Area, Pune

145

Beyond the Name

To others, you're just a name,
And they say, "What's in a name?"
To you, it's your identity.

To others, you're part of the crowd,
Your existence doesn't matter to others
But to you, it's your entire life.

To others, it's just success,
To you, it's the result of your immense efforts,
That you've put in so far.

To others, you're just a number in times of crisis,
But to many people, you're the pivot,
Their lives revolve around you.

To others, you're getting old,
To you, age is just a number
A chance to learn from every moment,
And to cross every benchmark set by others.

Deepa Virmani
PRT
PM SHRI KV AFS Bareilly

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केन्द्रीय विद्यालय संगठन
Kendriya Vidyalaya Sangathan

18, संस्थागत क्षेत्र, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली-110016

18, Institutional Area, Shaheed Jeet Singh Marg, New Delhi-110016

---

https://kvsangathan.nic.in/ | @KVSHQ | @KVS_HQ | @kvshqr | KVS HQ

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर